पाठ-एक

दीप बनें हम

प्रकाश, आराधना, बरसात, सीप, साधना, अन्धेरा, कर्म , रचना।

प्रकाश की साधना करें।
ज्ञान की आराधना करें।
अज्ञान का अन्धेरा भगे –
दीप बनें हम ।।
तारों से हम बात करें।
प्रेम की बरसात करें।
मोती रचे कर्म के सदा –
सीप बनें हम ।।
दीप बनें हम ।।

प्रहन-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

साधना = कार्य-सिद्धि, उपासना।

आराधना = पूजा, उपासना।

सीप = शंख, घोंघे आदि की जाति के एक जलचर प्राणी का खोल।

2. उत्तर दीजिए :

(क) हमें किसकी साधना करनी है ?

(ख) हमें किसकी आराधना करनी है ?

(ग) अज्ञान का अन्धेरा भगाने के लिए हमें क्या करना है ?

(घ) हमें किससे बात करनी है ?

(ङ) कर्म के मोती रचने के लिए हमें क्या करना है ?

(च) 'दीप बनें हम' कविता का मूल भाव लिखिए।

(छ) दीप की क्या विशेषता है ?

(ज) आप दीप बनेंगे तो क्या करना चाहेंगे ?

3. वाक्यों में प्रयाग कीजिए :

प्रकाश ---

साधना ---

आराधना ---

अज्ञान ---

बरसात ---

कर्म ---

सीप ---

4. लिंग बताइए :

साधना – --

ज्ञान – --

तारा – --

आराधना – --

बरसात – --

मोती – --

Q3A3E3

पाठ-दो

हियाङ्-तान्नबा

नौका, प्रतियोगिता, खिलाड़ी, अग्रभाग, अगुआ, डाँड़, नियन्त्रण, खाई, शुक्ल, एकादशी, आँवला, उपलक्ष्य, निर्माल्य।

'हियाङ् तान्नबा' मणिपुर का एक प्राचीन खेल है। इसका अर्थ है नौका-दौड़ प्रतियोगिता का खेल। इस खेल में दो लम्बी नौकाओं का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक नौका में सत्रह-सत्रह खिलाड़ी होते हैं। नौका के अग्रभाग में प्रत्येक दल का अगुआ हाथ में डाँड़ लेकर खड़ा रहता है। उसे ''तेङ्माइ लेप्पा'' कहा जाता है। वह नौका चलाने में भाग नहीं लेता। नौका के पिछली भाग में एक खिलाड़ी बैठा रहता है। उसे ''हिनाओ शाबा'' कहा जाता है। दौड़ प्रतियोगिता के दौरान नौका का पूरा नियन्त्रण उसके हाथ में रहता है। नौका चलाने वाले खिलाड़ियों को ''हिरोइ'' कहा जाता है। वे खड़े -खड़े नौका को खेते हैं।

हियाङ् का खेल नदी जैसी एक बड़ी और लम्बी खाई में होता है, जिसे मणिपुरी भाषा में ''थाङ्गपात' कहा जाता है। पुराने जमाने में इसे ''पाना हियाङ्'' के नाम से जाना जाता था। पहले शासन की सुविधा के लिए मणिपुर छह प्रशासनिक खण्डों में विभाजित था। एक-एक खण्ड को ''पाना'' कहा जाता था। पाना हियाङ् के अवसर पर दो-दो दल बनाए जाते थे। एक दल महाराज-पक्ष का और दूसरा महारानी-पक्ष का माना जाता था। महाराज-पक्ष के खिलाड़ियों को ''निङ्थौनाइ'' कहा जाता था और महारानी-पक्ष के खिलाड़ियों को ''लैमनाइ''।

हियाङ् तान्नबा का वर्तमान रूप ''हैग्रु-हिदोङ्बा'' है। इसे एक धार्मिक पर्व माना जाता है। यह लाङ्बन महीने की शुक्ल एकादशी को मनाया जाता है। यह हर वर्ष सगोलबन्द में श्रीविजयगोविन्दजी के मन्दिर के पास स्थित थाङ्गपात में सम्पन्न होता है। ''हैग्रु-हिदोङ्बा'' का अर्थ है, नाव पर आँवला चढ़ाना। यहाँ के लोग इस पर्व के पहले आँवला खाना अशुभ मानते हैं। इसलिए वे इस पर्व के बाद ही आँवला खाते हैं। इस पर्व के उपलक्ष्य में 108 आँवलों की एक माला और हाथ के कुटे चावल के 108 दानों की एक माला श्रीविजयगोविन्दजी को अर्पित की जाती है। बाद में निर्माल्य के रूप में दोनों नावों के अग्रभाग में एक-एक माला पहना दी जाती है।

''हियाङ् तान्नबा'' मणिपुर के पुराने जातीय पर्वों में से एक है। आज भी इसका बहुत महत्व है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

प्रतियोगिता = प्रतिस्पद्र्धा, दौड़, मुकाबला।
नौका = नाव।
अग्रभाग = आगे का भाग।
अगुआ = मुखिया, नेता।
डाँड़ = नाव खेने का डण्डा।
नियन्त्रण = वश में रखना।
लुप्त = अदृश्य होना, लोप हो जाना, छिप जाना।
निर्माल्य = किसी देवता को समर्पित किया हुआ पदार्थ।

2. उत्तर दीजिए :

(क) हियाङ् तान्नबा कैसा खेल है ?
(ख) हियाङ् तान्नबा में कितनी नौकाओं का प्रयोग किया जाता है ?
(ग) प्रत्येक नौका में कितने खिलाड़ी होते हैं ?
(घ) प्रत्येक दल के अगुआ को क्या कहते हैं ?
(ङ) हिनाओ शाबा कहाँ बैठता है ?

(च) नौका खेने वाले खिलाड़ियों को क्या कहते हैं ?

(छ) हियाङ्-तान्नबा का खेल कहाँ होता है ?

(ज) ''पाना'' क्या है ?

(झ) महाराज-पक्ष के खिलाड़ियों को क्या कहते हैं ?

(ञ) महारानी-पक्ष के खिलाड़ियों को क्या कहते हैं ?

(ट) हियाङ्-तान्नबा का वर्तमान रूप क्या है ?

(ठ) हैग्रु-हिदोङ्बा कब मनाया जाता है ?

(ड) हैग्रु-हिदोङ्बा कहाँ सम्पन्न होता है ?

(ढ) हैग्रु-हिदोङ्बा के उपलक्ष्य में श्रीविजयगोविन्दजी को क्या अर्पित किया जाता है ?

(ण) हैग्रु अर्थात आँवला की कुछ विशेषताएँ लिखिए।

(त) आँवला के अलावा कुछ फलों के नाम बताइए, जो मणिपुर में पाए जाते हैं ?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

प्रतियोगिता ---

अग्रभाग ---

अगुवा ---

नियन्त्रण ---

वर्तमान ---

लुप्त ---

विभाजित ---

अशुभ ---

निर्माल्य ---

उपलक्ष्य ---

4. तालिका को देखिए और वाक्य बनाइए :

हियाङ्	का	नौका-दौड़ की प्रतियोगिता का खेल खेल नदी जैसी एक बड़ी और लम्बी खाई में मणिपुर के पुराने जातीय पर्वों में से एक वर्तमान रूप हैग्रु हिदोङ्बा	है। होता है।

5. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) हियाङ् तान्नबा का अर्थ है नौका-दौड़ प्रतियोगिता का खेल।

(ख) प्रत्येक नौका में सत्रह-सत्रह खिलाड़ी होते हैं।

(ग) पाना हियाङ् की प्रथा अब तक प्रचलित है।

(घ) हियाङ् तान्नबा का वर्तमान रूप ''हैग्रु हिदोङ्बा'' है।

6. निम्नांकित पर्याय-शब्दों को पढ़िए और याद रखिए :

नौका = नाव, पोत, डोंगी।

हाथ = हस्त, कर, पाणी।

वर्ष = बरस, साल।

पर्व = त्योहार, उत्सव।

नदी = सरिता, तटिनी, तरंगिणी, प्रवाहिणी।

घर = गृह, सदन, भवन, निकेतन, निवास, आवास।

कपड़ा = वस्त्र, चीर, अम्बर ।

साँप	=	सर्प, नाग, भुजंग, विषधर, फणधर।
चिड़िया	=	खग, पक्षी, विहग, पंछी, विहंगम।
हवा	=	पवन, वायु, अनिल, समीर, मारुत।
अग्नि	=	अनल, आग, पावक।
घोड़ा	=	अश्व, हय, तुरंग, सैन्धव।
अहंकार	=	घमण्ड, अभिमान, दर्प, गर्व।
आकाश	=	नभ, गगन, अम्बर, व्योम, अनन्त, आसमान।
कमल	=	पंकज, जलज, नलिन, पद्‌म, सरोज, राजीव।
जल	=	पानी, तोय, नीर, सलिल, पथ, अम्बु।
दिन	=	वासर, दिवस, वार, दिवा।
पर्वत	=	अचल, गिरि, शैल, नग, पहाड़।
पृथ्वी	=	धरा, भूमि, धरती, भू, वसुन्धरा।
बादल	=	मेघ, घन, जलद, जलधर, पयोद, नीरद।
माता	=	माँ, मातृ, जननी, अम्बा।
राजा	=	नृप, महीप, नरेश, नरेन्द्र, नृपति।
पेड़	=	वृक्ष, तरु, विटप, दरख्त।
सूर्य	=	सूरज, भानु, भास्कर, रवि, दिनकर, प्रभाकर।

पाठ-तीन

योग और स्वास्थ्य

D6N8P7

योग, प्रशिक्षक, प्रदर्शक, अवयव, आध्यात्मिक, यम, प्राणायाम, प्रत्याहारा, समाधि, मुद्रा, सुडोल, सूक्ष्म, विषाक्तता, दही, छाछ।

(योग की कक्षा। एक प्रशिक्षक। एक प्रदर्शक और कुछ विद्यार्थी। योग की शिक्षा की तैयारी।)

विद्यार्थी – गुरुजी, योग क्या है ? इसके कौन-कौन से लाभ हैं ?

प्रशिक्षक – ध्यान से सुनो, मनुष्य तीन अवयवों से बना है । शरीर, मन और आत्मा। इन तीनों को अच्छा रखने के लिए तीन बातें आवश्यक हैं। शरीर के लिए स्वास्थ्य, मन के लिए स्थिर बुद्धि और आत्मा के लिए आध्यात्मिक ज्ञान। भारतीय दर्शन शास्त्र में मनुष्य के लिए तीन तत्व आवश्यक माने गए हैं – कर्म, ज्ञान और शक्ति। महर्षि पातंजलि के योग-सूत्र में भी इन तीन तत्वों की चर्चा की गई। इन तीनों को एक साथ जोड़ कर रखने का साधन ही योग है। योग के आठ अंग हैं । यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहारा, धारणा, ध्यान और समाधि।

विद्यार्थी – गुरुजी, आसन क्या है ?

प्रशिक्षक – आसन एक पारम्परिक व्यायाम है जिसका सम्बन्ध शरीर, मन और आत्मा से है। आसन के लिए साँस का अभ्यास बहुत जरूरी है। साँस का अभ्यास ही स्वास्थ्य का आधार है। आसन का अभ्यास करते समय साँस पर नियन्त्रण रखना बहुत आवश्यक होता है।

(गोपाल से) बेटा गोपाल, तुम साँस को नियन्त्रित करके आसन की एक मुद्रा दिखा दो। (गोपाल दो-तीन आसन दिखाकर साँस लेने के नियम का प्रदर्शन करता है।)

विद्यार्थी – गुरुजी, इससे हमारे शरीर को क्या लाभ होता है ?

प्रशिक्षक – योग से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। स्वस्थ-शरीर के लिए ही हम व्यायाम करते हैं और व्यायाम से हमारा शरीर सुडौल और अच्छा बनता है। रोग से बचने के लिए भी हम योगासन करते हैं। योग से शरीर का रक्त साफ होता है। ताड़ासन से शरीर में मन का सूक्ष्म भाग बढ़ता है। वृक्षासन से शरीर सुन्दर बन जाता है। वीरभद्रासन से कमजोर हृदय-गति और रक्त-विषाक्तता ठीक हो जाती है। अत : योग और स्वास्थ्य का सम्बन्ध दही-छाछ का सम्बन्ध जैसा है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

प्रशिक्षक	=	सिखाने वाला, इन्सट्रक्टर।
प्रदर्शक	=	दिखाने वाला।
अवयव	=	अंग, शरीर का कोई भाग।
आध्यात्मिक	=	परमात्मा या आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला।
मुद्रा	=	शरीर के अंगों की कोई विशेष भावसूचक स्थिति।
व्यायाम	=	कसरत, अभ्यास।
सूक्ष्म	=	बहुत बारीक, बहुत छोटा।
विषाक्तता	=	विषमिश्रित होने का भाव।
दही	=	दूध में खटाई या जामन डालकर बनाया हुआ पदार्थ।
छाछ	=	मट्ठा, तक्र।

2. उत्तर दीजिए :

(क) मनुष्य किन-किन अवयवों से बना है ?

(ख) मनुष्य के तीनों अवयवों को अच्छा रखने के लिए क्या आवश्यक हैं।
(ग) योग क्या है ?
(घ) योग के कितने अंग होते हैं और कौन-कौन से हैं ?
(ङ) आसन क्या है ?
(च) स्वास्थ्य का आधार क्या है ?
(छ) आसन का अभ्यास करते समय क्या करना बहुत आवश्यक होता है ?
(ज) योगासन से हमारे शरीर को क्या लाभ होता है ?
(झ) ताड़ासन से क्या लाभ होता है ?
(ञ) वृक्षासन से क्या लाभ होता है ?
(ट) वीरभद्रासन से क्या लाभ होता है ?
(ठ) अपने स्वास्थ्य के लिए आप किस प्रकार का भोजन करेंगे ?
(ड) व्यायाम करने से जो लाभ होता है, उसके बारे में अपने विचार लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

प्रशिक्षक --
अवयव --
आध्यात्मिक --
मुद्रा --
सूक्ष्म --
व्यायाम --
अभ्यास --
नियन्त्रण --
सुडौल --
सम्बन्ध --

4. खाली जगह भरिए :

(क) आसन के लिए ---------------------------------- जरूरी है।

(ख) स्वस्थ शरीर के लिए ---------------------------------- हैं।

(ग) व्यायाम से ------------------------------ अच्छा बनाता है।

(घ) योग से -- होता है।

5. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और वाक्य बनाइए :

योग व्यायाम ताड़ासन वृक्षासन वीरभद्रासन	से	हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। हमारा शरीर सुडौल और अच्छा बनाता है। शरीर में मन का सूक्ष्म भाग बढ़ता है। शरीर सुन्दर बन जाता है। कमजोर हृदयगति ठीक हो जाती है।

----

6. सही कथन चुनिए और लिखिए :

(क) आसन का सम्बन्ध शरीर, मन और आत्मा से है।

(ख) आसन में साँस का अभ्यास नहीं होता।

(ग) योग से शरीर का रक्त साफ होता है।

(घ) रोग से बचने के लिए हम योगासन करते हैं।

----

7. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

प्रस्तुत पाठ में संस्कृत के कुछ ऐसे शब्द है, जो अपने मूल रूप और अर्थ में प्रयुक्त हैं, जैसे – योग, शिक्षा, मन, आत्मा, बुद्धि, ज्ञान, कर्म, भक्ति, ध्यान, आसन, अभ्यास, मुद्रा, व्यायाम, रक्त, आदि।

हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत के ऐसे शब्दों को स्रोत के आधार पर तत्सम कहा जाता है।

कुछ तत्सम शब्द इस प्रकार हैं :-

अखिल, अग्नि, अज्ञान, अर्ध, अश्रु, अष्ट, आयुष्मान, आश्चर्य, इक्षु, उच्च, उज्जवल, उपाध्याय, ओष्ठ, कच्छप, कर्पुर, कर्ण, कार्य, गृह, ग्राम, ग्राहक, चन्द्र, चर्म, चूर्ण, छत्र, जिह्वा, दंत, दुर्बल, दीप, धर्म, नयन, निद्रा, निष्ठुर, पर्वत, पुरुष, पृथ्वी, भगिनी, मयुर, मित्र, यम, रोष, लवण, वधु, वायु, वृद्ध, शुक, सत्य, सर्प, सूर्य, स्वर्ग, स्वामी, स्त्री, हस्त, हृदय, हंस आदि।

E5W3J7

पाठ-चार

ध्वनि-प्रदूषण और हमारा जीवन

आधुनिक, सभ्यता, प्रदूषण, ध्वनि, कर्कश, आनन्द, नुकसान, कड़कड़ाहट, पहिया, शोर, मस्तिष्क, चिड़चिड़ा, रगड़ना।

आधुनिक सभ्यता प्रदूषण से परेशान है। प्रदूषण कई प्रकार का होता है। उन्हीं में से एक है, ध्वनि-प्रदूषण। मोटर-कारों, बसों, रेलगाड़ियों, हवाई-जहाजों आदि की भारी तथा कर्कश आवाज से ध्वनि-प्रदूषण होता है। कारखानों में लगी बड़ी-बड़ी मशीनें भी ध्वनि-प्रदूषण का कारण बनती है।

कोमल और धीमी ध्वनि सुनने में सभी को आनन्द आता है। हर कोई मधुर ध्वनि सुनना चाहता है। शोर और कोलाहल कोई पसन्द नहीं करता। शोर हमारे कानों को भारी नुकसान पहुँचाता है। इंजिन की साँय-साँय, बिजली कड़कड़ाहट, मोटर-कार के ब्रेक लगाने से पहियों के जमीन पर रगड़ने से उत्पन्न ककर्श आवाज हमारे कानों को अप्रिय लगती है।

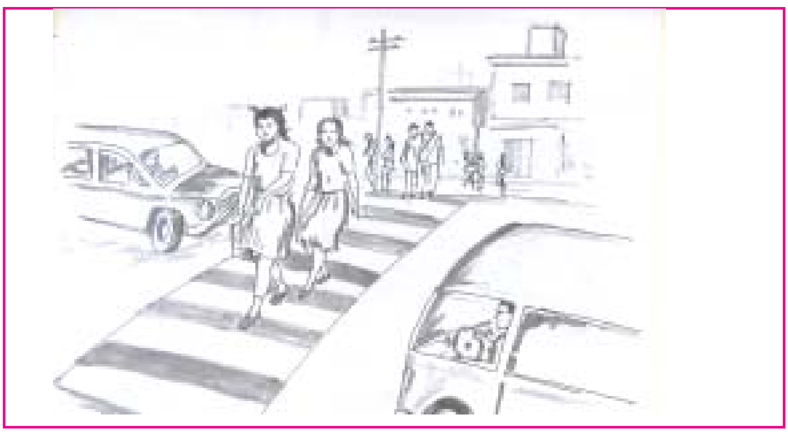

आज सारे विश्व में शहरी जीवन ध्वनि-प्रदूषण से घिरा है। शहरों से गाँवों तक पेट्रोल वाली गाड़ियाँ तथा डीजल और बिजली वाली ट्रेनें चलती रहती हैं। दिन-रात आकाश हवाई-जहाजों की उड़ान की आवाज से भरा रहता है। शहरों के बाजारों में शोर ही शोर होता है। इससे हमारे जीवन को काफी हानि होती है। शहरों में स्थान -स्थान पर तीव्र आवाज में लाउड् स्पीकर बजते रहते हैं। इससे कई लोगों के कान खराब हो जाते हैं।

ध्वनि-प्रदूषण से हमारे कान ही खराब नहीं होते, बल्कि मस्तिष्क पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। ध्वनि-प्रदूषण सोचने-समझने और अध्ययन करने की क्षमता को भी नुकसान पहुँचाता है। यह हमारे सामान्य व्यवहार को भी प्रभावित करता है। ध्वनि-प्रदूषण के शिकार लोग चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं।

ध्वनि-प्रदूषण की हानियों को देखते हुए हमें इससे बचने का उपाय करना चाहिए। रेडियो या टी.वी. कभी ऊँची आवाज में नहीं बजाना चाहिए। मोटर गाड़ियों में ध्वनि-नियन्त्रक यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। इतना ही नहीं, ऊँची आवाज में बोलने से भी बचना चाहिए।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

सभ्यता = सिविलाइजेशन, शिष्टता।
प्रदूषण = दोषयुक्त होने की स्थिति या भाव।
ध्वनि = आवाज, शब्द।
कर्कश = कठोर, तीव्र।
व्यवहार = कार्य, आचरण, बर्ताव।
आनन्द = खुशी, हर्ष।
नुकसान = हानि, क्षति।
कड़कड़ाहट = कड़ी चीज टूटने या गिरने की आवाज।
चिड़चिड़ा होना = झुँझलाना, तुनक-मिजाज होना।

2. उत्तर दीजिए :

(क) आधुनिक सभ्यता किससे परेशान है ?
(ख) किससे ध्वनि-प्रदूषण होता है ?
(ग) हमारे कानों को क्या अप्रिय लगता है ?
(घ) किन कारणों से हमारे कान खराब हो जाते हैं ?

(ङ) ध्वनि-प्रदुषण से क्या-क्या नुकसान होते हैं ?
(च) ध्वनि-प्रदुषण से बचने के लिए क्या उपाय करना चाहिए ?
(छ) किन-किन क्षेत्रों में प्रदुषण होता है ?
(ज) विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से मानव-जीवन में क्या-क्या नुकसान हो सकते हैं ?
(झ) विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों को कैसे नियन्त्रित किया जा सकता है ?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

आधुनिक --
प्रदूषण --
कर्कश --
कोलाहल --
अप्रिय --
तकलीफ --
मस्तिष्क --
नुकसान --
प्रभावित --
समाप्त --

4. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) आधुनिक सभ्यता प्रदूषण से परेशान है। ☐
(ख) कोमल और धीमी ध्वनि सुनने में सभी को आनन्द नहीं आता है। ☐
(ग) शोर हमारे कानों को भारी नुकसान पहुँचाता है। ☐
(घ) आज शहरी जीवन ध्वनि-प्रदूषण से घिरा है। ☐
(ङ) ध्वनि-प्रदूषण से केवल हमारे कान ही खराब होते हैं। ☐

5. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और खण्ड ''क'' तथा ''ख'' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
शोर और कोलाहल	हमारे जीवन को काफी हानि होती है।
बाजारों के शोर से	कई लोगों के कान खराब हो जाते हैं।
लाउड स्पीकर से	चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं।
ध्वनि-प्रदूषण के शिकार लोग	कोई पसन्द नहीं करता।

----

6. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और ''चाहना'' तथा ''चाहिए'' के प्रयोग-अन्तर और अर्थ-भेद को समझिए :

मैं रोटी खाना चाहता हूँ।	मुझे रोटी खानी चाहिए।
वह सोना चाहता है।	उसे सोना चाहिए।
हम प्रेम-भाव से रहना चाहते हैं।	हमें प्रेम-भाव से रहना चाहिए।
तुम यह चित्र देखना चाहते हो।	तुम्हें यह चित्र देखना चाहिए।
आप नहीं आना चाहते हैं।	आपको नहीं आना चाहिए।
हम ऊँची आवाज में नहीं बोलना चाहते हैं।	हमें ऊँची आवाज में नहीं बोलना चाहिए।

7. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

प्रस्तुत पाठ में तीन ऐसे शब्द हैं, जो संस्कृत से लिए गए हैं, परन्तु थोड़े परिवर्तन के साथ हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे – कान, गाँव, रात।

ऐसे शब्दों को तद्भव कहा जाता है। कुछ तद्भव शब्द इस प्रकार हैं –

अचरच, अजान, अन्धा, आग, आम, आँसू, आठ, ईख, ओठ, कपुर, काग, घड़ा, घर, घोड़ा, चाम, छाता, जीभ, थल, दही, दाँत, दूध, नंगा, नैन, पैर, बहू, बात, मोर, मुँह, माँ, साँप, हाथ, हाथी आदि।

पाठ-पाँच

रानी गाइडिन्ल्यू

खिलाफ, भरसक, अवस्था, अनुयायी, विद्रोह, बलिदान, कमान, गुप्त, संचालक, अचानक, आक्रमण, भनक, आजीवन, कारावास, आजादी, व्यतीत, संघर्ष, प्रेरणा।

रानी गाइडिनल्यू एक स्वतन्त्रता-सेनानी थीं। वे अंगरेजों के खिलाफ लड़ीं। उन्होंने अंगरेजों को मणिपुर से भगाने की भरसक कोशिश की।

गाइडिन्ल्यू का जन्म 26 जनवरी, 1915 को मणिपुर के तमेङ्लोङ् जिले के नुङ्खाओ नामक गाँव में हुआ था। वे अपने माता-पिता की तीसरी सन्तान थीं। बचपन से ही वे एक साहसी लड़की थीं। तेरह वर्ष की अवस्था में वे जोदोनाङ् की अनुयायी हो गईं। जादोनाङ् अंगरेज सरकार के खिलाफ विद्रोह करने वाले वीर पुरुष थे। अंगरेज सरकार को इसका पता चल गया। उसने जादोनाङ् को पकड़ा और फाँसी पर लटका दिया।

जादोनाङ् के बलिदान के बाद गाइडिन्ल्यू ने अंगरेज सरकार के खिलाफ विद्रोह की कमान सम्भाली। इसी कारण अंगरेज सरकार ने उन्हें पकड़ने के लिए जाल बिछाया, किन्तु अंगरेज सरकार उन्हें पकड़ नहीं सकी।

गाइडिन्ल्यू गुप्त रूप से गाँव-गाँव घूमती थीं और विद्रोह का संचालन करती थीं। उन्होंने हङ्ग्रूम में एक किला बनवाया। अंगरेज सरकार को इसकी भनक लग गई। उसने अचानक वहाँ पर आक्रमण कर दिया। नागा विद्रोही अंगरेज-सेना का सामना नहीं कर सके। अंगरेज सरकार ने गाइडिन्ल्यू को पकड़ लिया। उन्हें पहले कोहिमा की तथा बाद में इम्फाल की जेल में रखा गया।

सन् 1947 में भारत को आजादी मिलने के बाद भारत सरकार ने गाइडिन्ल्यू को छोड़ दिया और उन्हें आजीवन पेंशन दी। सन् 1956 तक उन्होंने एक समाज-सेविका के रूप में जीवन व्यतीत किया।

आगे चलकर गाइडिन्ल्यू ने भारत सरकार के खिलाफ विद्रोह किया। छह वर्ष के निरन्तर संघर्ष के बाद भारत सरकार के साथ समझौता हुआ। सन् 1972 में भारत सरकार ने उन्हें स्वतन्त्रता-सेनानी घोषित किया और ''ताम्र-पत्र'' प्रदान किया। इसके बहुत वर्ष पहले पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें ''रानी'' की उपाधि दी थी। तभी से लोग उन्हें रानी गाइडिन्ल्यू के नाम से जानते हैं।

हमारे देश की इस वीर नारी की मृत्यु 17 फरवरी, 1993 ई. को हुई। उनका जीवन हम सब को अपनी स्वाधीनता की रक्षा की प्रेरणा देता रहेगा।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

खिलाफ = विरुद्ध।
भरसक = पूरी शक्ति के साथ।
अनुयायी = पीछे जानेवाला, अनुकरण करने वाला, मानने वाला।
कमान = आदेश, हुक्म, फौजी ड्यूटी।
घोषणा = एलान।
निरन्तर = लगातार।
सेनानी = सेना-नायक।
संचालन = चलाना।
भनक = उड़ती हुई खबर, अस्पष्ट ध्वनि।

आक्रमण = हमला, चढ़ाई।
आजीवन = जिन्दगी भर, जीवन भर।
कारावास = कैद, जेल।
निवेदन = प्रार्थना, किसी से कुछ कहना।
समझौता = दोनों पक्षों द्वारा संधि की शर्तों की स्वीकृति।
ताम्र-पत्र = खुदा हुआ ताँबे का पत्तर।
उपाधि = योग्यता या प्रतिष्ठा सूचित करने वाला शब्द।
प्रेरणा = उकसाने की क्रिया।

2. उत्तर दीजिए :

(क) रानी गाइडिन्ल्यू किसके खिलाफ लड़ती थीं ?
(ख) गाइडिन्ल्यू का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
(ग) बचपन में गाइडिन्ल्यू कैसी लड़की थीं ?
(घ) गाइडिन्ल्यू किसकी अनुयायी हो गईं ?
(ङ) अंगरेज सरकार ने जादोनाङ् को क्यों फाँसी पर लटका दिया ?
(च) कब गाइडिन्ल्यू ने अंगरेज सरकार के खिलाफ विद्रोह की कमान सम्भाली ?
(छ) गाइडिन्ल्यू ने लोगों से क्या कहा ?
(ज) कहाँ-कहाँ अंगरज सरकार के खिलाफ विद्रोह शुरू हुआ ?
(झ) गाइडिन्ल्यू ने कहाँ किला बनवाया ?
(ञ) अंगरेज सरकार ने गाइडिन्ल्यू को पकड़ने के बाद कहाँ रखा ?
(ट) कब गाइडिन्ल्यू को जेल से छोड़ दिया गया ?
(ठ) सन् १९५६ तक गाइडिन्ल्यू ने किस रूप में जीवन व्यतीत किया ?
(ड) भारत सरकार ने गाइडिन्ल्यू का क्या घोषित किया ?
(ढ) किसने गाइडिन्ल्यू को "रानी" की उपाधि दी थी ?
(ण) गाइडिन्ल्यू की मृत्यु कब हुई ?
(त) गाइडिन्ल्यू के जीवन का आदर्श क्या है ?
(थ) अंगरेज के खिलाफ विरोध करने वाले मणिपुर के कुछ वीर सेनानियों के नाम लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

सेनानी --

सन्तान --

अनुयायी --

आजीवन --

कमान --

कारावास --

समझौता --

उपाधि --

विद्रोह --

प्रेरणा --

4. सही शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :

(क) गाइडिन्ल्यू अपने माता-पिता की ------------------- सन्तान थीं।
(दूसरी/तीसरी)

(ख) ---------- की अवस्था में गाइडिन्ल्यू जादोनाङ् की अनुयायी हो गईं।
(तेरह वर्ष/पन्द्रह वर्ष)

(ग) गाइडिन्ल्यू ने हङ्ग्रूम में एक ----------------------- बनवाया।
(घर/किला)

(घ) अंगरेज सरकार ने गाइडिन्ल्यू को पहले ----------- की जेल में रखा।
(कोहिमा/इम्फाल)

(ङ) आजादी मिलने के बाद ---------------- ने गाइडिन्ल्यू को छोड़ दिया।
(अंगरेज सरकार/भारत सरकार)

(च) सन् १९७२ में भारत सरकार ने गाइडिन्ल्यू को -------------------
घोषित किया। (स्वतन्त्रता-सेनानी/देश-द्रोही)

5. तालिका को ध्यान से पढ़िए और खण्ड ''क'' तथा ''ख'' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
गाइडिन्ल्यू बचपन से ही	पकड़ने के लिए जाल बिछाया।
जादोनाङ् अंगरेज सरकार के खिलाफ	सामना नहीं कर सके।
अंगरेज सरकार ने गाइडिन्ल्यू को	एक साहसी लड़की थीं।
नागा विद्रोही अंगरेज सेना का	विद्रोह करने वाले वीर पुरुष थे।

----

6. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और समझिए :

तोम्बा ने अचौ को किताब दी।

चाओबा ने रानी को मिठाई खिलाई।

मन्त्री ने किसानों को ट्रेक्टर दिए।

भारत सरकार ने गाइडिन्ल्यू को ''रानी'' की उपादि दी थी।

उपर्युक्त चारों वाक्यों में दो-दो कर्म हैं। पहला कर्म गौण है और इसके साथ ''को'' विभक्ति लगती है। दूसरा कर्म मुख्य है। और इसके साथ कोई भी विभक्ति नहीं लगती।

7. ध्यान से पढ़िए, समझिए और याद रखिए :

हिन्दी में तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग खूब होता है। कुछ तत्सम शब्द और उनके तद्भव रूप नीचे दिए जा रहे हैं –

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अग्नि	आग	अन्ध	अन्धा
अम्ब	आम	अष्ट	आठ
अर्ध	आधा	अश्रु	आँसू
आश्चर्य	अचरज	इक्षु	ईख
उच्च	ऊँचा	एकत्र	इकट्ठा
ओष्ठ	ओठ	कर्ण	कान
कार्य	काज	कर्म	काम
क्षेत्र	खेत	क्षीर	खीर
गृह	घर	ग्राम	गाँव
घट	घड़ा	चन्द्र	चाँद
छत्र	छतरी	जंघा	जांघ
जिह्वा	जीभ	दधि	दही
दुग्ध	दूध	नव	नया
नयन	नैन	निद्रा	नींद
पुत्र	पुत	प्रस्तर	पत्थर
मयुर	मोर	मस्तक	माथा
माता	माँ	मित्र	मीत
मुख	मुँह	रात्रि	रात
वधु	बहू	सर्प	साँप
विवाह	ब्याह	सत्य	सच
सप्त	सात	सूर्य	सूरज
स्थल	थल	हस्त	हाथ
हस्ती	हाथी	हृदय	हिय
			आदि।

P8H9D3

पाठ-छह

हमारा भारत

विशाल, उपसागर, विभाजित, उपजाऊ, तम्बाकू, कृषि, उद्योग, आणविक, उत्पादन, सूत्र, सम्पर्क, दूतावास, नागरिक, अनोखा, निराला, पिरोना।

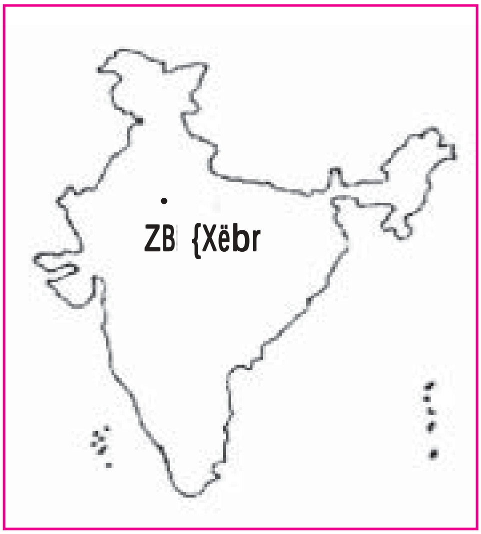

हमारा देश बहुत विशाल है। इसका नाम भारत है। इसके उत्तर में नेपाल और हिमालय की पवर्तमालाएँ हैं। हिमालय की चोटियाँ साल भर बर्फ से ढकी रहती हैं। हमारे देश के पश्चिम में पाकिस्तान और अरब सागर तथा दक्षिण में हिन्द महासागर हैं। इसके पूर्व में म्यान्मार और बंग उपसागर हैं।

भारत नदियों और पर्वतों का देश है। गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, कावेरी, गोदावरी, नर्मदा, ताप्ति आदि भारत की प्रमुख नदियाँ हैं। भारत में नदियों को पवित्र माना जाता है। गंगा का जल सब से पवित्र एवं श्रेष्ठ माना जाता है। यह कभी नहीं सड़ता है। भारत के मध्य भाग में विंध्य पर्वत है, जिसने भारत को उत्तर और दक्षिण में विभाजित किया है। अरावली, नीलगिरि, महादेव, सतपुड़ा भारत की अन्य पर्वतमालाएँ हैं। पूर्वांचल का क्षेत्र तो पर्वतमालाओं से घिरा हुआ है।

भारत में अनेक शहर हैं। दिल्ली, मुम्बई (बम्बई), चेन्नई (मद्रास), कोलकाता (कलकत्ता), चंडीगढ़, लखनऊ, अहमदाबाद, हैदराबाद, पटना, भोपाल, जयपुर, तिरुवनन्तपुरम (त्रिवेन्द्रम), गुवाहाटी (गौहाटी), इम्फाल आदि भारत के प्रमुख शहर हैं।

उत्तर भारत में गंगा-घाटी बहुत ऊपजाऊ क्षेत्र है। धान, गेहूँ, चाय, दालें, आलू, ईख, तम्बाकू आदि भारत की प्रमुख फसलें हैं। कृषि के क्षेत्र में भारत ने काफी प्रगति की है। भारतीय किसान बड़े मेहनती होते हैं। उनकी संख्या बहुत बड़ी है। भारत के किसानों का देश कहा जाता है।

भारत विकासशील देशों में सब से आगे है। यहाँ विभिन्न धर्मों और जातियों के लोग रहते हैं। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि यहाँ के प्रमुख धर्म हैं। यहाँ एक धर्म के लोग दूसरे धर्म का बहुत आदर करते हैं।

भारत बहुभाषी देश है। हिन्दी, उर्दू, बंगला, मराठी, असमीया, मणिपुरी, गुजराती, कन्नड़, तेलुगु, तमिल, मलयालम, सिन्धी, पंजाबी आदि भारत की प्रमुख भाषाएँ हैं। हिन्दी सभी भाषा-भाषियों को पिरोने का काम करती है। यह भारत की सम्पर्क-भाषा है। यह भारत की राष्ट्रभाषा भी है।

नई दिल्ली भारत की राजधानी है। केन्द्रीय सरकार के सभी कार्यालय यहाँ हैं। विभिन्न देशों के दूतावास भी दिल्ली में हैं। कुतुबमीनार, जन्तर-मन्तर, लाल-किला, जामा मस्जिद, संसद-भवन, राष्ट्रपति-भवन, राजघाट, शान्तिवन, विजयघाट, त्रिमूर्ति-भवन, इंडिया-गेट आदि दिल्ली के दर्शनीय स्थान हैं।

भारत लोकतान्त्रिक राष्ट्र है। भारत के सभी नागरिकों को अपनी पसन्द के प्रतिनिधि चुनने का अधिकार है। प्रधान मन्त्री अपने मन्त्रि-मण्डल के सहयोग से देश का शासन करता है। मन्त्रि-मण्डल के अलावा राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति भी होते हैं।

हमारा देश विश्व में अनोखा और निराला है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

विशाल = बड़ा।

उपजाऊ = जिसमें अधिक उपज हो।

पिरोना = सुई के छेद में धागा डालना, धागे में फूल आदि गूँथना।

दूतावास = राजदूत के रहने का स्थान और उसका कार्यालय।

अनोखा = अनूठा, अपूर्व, सुन्दर।

कृषि = खेती।

निराला = अजीब, अनुपम, अद्वितीय।

2. उत्तर दीजिए :

(क) भारत के उत्तर में कौन-सा देश है ?

(ख) भारत के दक्षिण में कौन-सा महागागर है ?

(ग) भारत की प्रमुख नदियाँ कौन-कौन सी हैं ?

(घ) किसने भारत को उत्तर और दक्षिण में विभाजित किया है ?

(ङ) भारत में कौन-कौन सी पर्वतमालाएँ हैं ?

(च) पूर्वांचल किससे घिरा हुआ है ?

(छ) भारत में कौन-कौन से मुख्य शहर हैं ?

(ज) गंगा घाटी कैसा क्षेत्र है ?

(झ) भारत को किसानों का देश क्यों कहा जाता है ?

(ञ) भारत में प्रमुख रूप से कौन-कौन से धर्मे के लोग रहते हैं ?

(ट) भारत की प्रमुख भाषाएँ कौन-कौन सी हैं ?

(ठ) हिन्दी कैसा काम करती है ?

(ड) भारत की राष्ट्रभाषा क्या है ?

(ढ) दिल्ली में कौन-कौन से दर्शनीय स्थान हैं ?

(ण) भारत के सभी नागरिकों को कैसा अधिकार प्राप्त हैं ?

(त) कौन भारत का शासन करता है ?

(थ) हमारे भारत के बारे में आपके विचार संक्षेप में लिखिए।
(द) भारत के कुछ महान व्यक्तियों के नाम लिखिए।
(ध) 'हमारा मणिपुर' शीर्षक पर एक छोटा-सा आलेख लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

विशाल --

उपजाऊ --

उद्योग --

उत्पादन --

सम्पर्क --

नागरिक --

अनोखा --

निराला --

पूर्वांचल --

विभाजित --

4. उचित शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :

(क) भारत के दक्षिण में ---------------------------------- है।
(बंग उपसागर/हिन्द महासागर)

(ख) ------------------------------ का पानी कभी नहीं सड़ता है।
(गंगा/गोदावरी)

(ग) भारत ------------------------------ देशों में सब से आगे है।
(विकसित/विकासशील)

(घ) ------------------------------ भारत की सम्पर्क-भाषा है।
(हिन्दी/अंग्रेजी)

5. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के लागे (✕) का निशान लगाइए :

(क) भारत नदियों और पर्वतों का देश है। ☐

(ख) पूर्वांचल का पूरा क्षेत्र मैदानी है। ☐

(ग) गंगा-घाटी बहुत उपजाऊ क्षेत्र है। ☐

(घ) हिन्दी भारत की केवल राष्ट्रभाषा ही है। ☐

(ङ) विभिन्न देशों के दूतावास दिल्ली में हैं। ☐

6. पढ़िए, समझिए और याद रखिए :

(क) उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम चार दिशाओं के नाम हैं।

(ख) उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा को ईशान-कोण कहते हैं।

(ग) पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा को अग्नि-कोण कहते हैं।

(घ) दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा को नेऋत-कोण कहते हैं।

(ङ) पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा को वायव-कोण कहते हैं।

7. ध्यान से पढ़िए और विलोम शब्द समझिए :

उत्तर	-	दक्षिण
पूर्व	-	पश्चिम
ऊपर	-	नीचे
पवित्र	-	अपवित्र
गाँव	-	शहर
अमीर	-	गरीब
देश	-	विदेश
आदर	-	अनादर

8. सही उच्चारण के साथ पढ़िए :

ब्रह्मपुत्र, कृष्ण, सतपुड़ा, चण्डीगढ़, गुवाहाटी, तिरुवनन्तपुरम, आणविक, कन्नड़, राष्ट्रभाषा, मन्त्रिमडल, इंडिया-गेट।

B3V5U4

पाठ-सात

विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर

स्मरण, संग्रह, अगाध, सानिध्य, महान, मानवतावाद, बोलबाला, अभिनव, भेंट, विभूति, जमींदारी, ग्राम्य-वातावरण, सद्‌गुण।

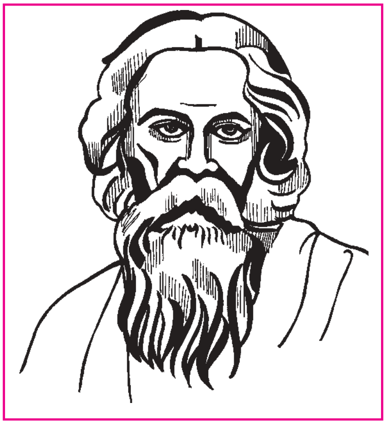

''गीतांजलि'' और ''विश्व भारती विश्वविद्‌यालय, शांतिनिकेतन'' का नाम आते ही, ऐसा कौन है, जिसे विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर का स्मरण न आता हो। ''गीतांजलि'' रवीन्द्रनाथ के भाव भरे गीतों का संग्रह है। इसकी रचना 1909-10 ई. में हुई थी और सन् 1913 ई. में इसी पुस्तक के लिए उन्हें ''नोबल पुरस्कार'' प्रदान किया गया था।

रवीन्द्रनाथ को अपनी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता से अगाध प्रेम था। वे बन्द कमरों के बजाय प्राचीन गुरुकुलों की भाँति मुक्त वातावरण में शिक्षा देने के लिए भी समर्थक थे। वे मानते थे कि प्रकृति के सानिध्य में प्राप्त ज्ञान मनुष्य को सद्‌गुणों से पूर्ण बनाता है। रवीन्द्रनाथ को पेड़-पौधों के बीच अपूर्व आनन्द मिलता था। वे चाहते थे कि शिक्षा का एक ऐसा केन्द्र बनाया जाए, जहाँ खुले आकाश के नीचे प्राकृतिक वातावरण में पढ़ाई-लिखाई की व्यवस्था हो। उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ने कोलकाता के कोलाहल से दूर बोलपुर में निवास करने के लिए जमीन मोल ली थी। रवीन्द्रनाथ ने पिता से अनुमति लेकर वहीं सन् 1901 में शांति-निकेतन की स्थापना की। जब उन्होंने प्रकृति की गोद में छात्रों को पढ़ाना

शुरू किया तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। यही शांतिनिकेतन विश्व-भारती के रूप में एक प्रसिद्ध शिक्षा-संस्था का जन्मदाता बना, जिसमें आज भी विदेशों से सैकड़ों छात्र उच्च शिक्षा ग्रहण करने आते हैं।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म 7 मई, सन् 1861 को हुआ। उनका परिवार कोलकाता के समाज में बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। रवीन्द्रनाथ जब छोटे ही थे, तो कोलकाता में छूत की बीमारी फूट पड़ी। इससे डरकर पिता ने उन्हें बोलपुर नामक गाँव में भेज दिया। वहीं उनका प्रकृति से परिचय हुआ। उनके बाल-मन पर प्रकृति का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जीवन भर अपने साहित्य में प्रकृति के विविध रूपों में चित्रित करते रहे। प्रकृति ने ही उन्हें जीवन का सच्चा अर्थ समझाया।

रवीन्द्रनाथ को कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड भेजा गया, किन्तु उसमें उन्हें कोई रस नहीं आया। इंग्लैण्ड में रहते हुए रवीन्द्रनाथ ने अंगरेजी भाषा और साहित्य के अध्ययन में समय व्यतीत किया तथा स्वाधीनता का महत्व समझा। भारत लौटते ही उन्हें जमींदारी की देखभाल के लिए गाँव भेजने का निश्चय किया गया। रवीन्द्रनाथ ने सोचा कि इस बहाने उन्हें प्रकृति के निकट रहने का अवसर मिलेगा; अत: वे खुशी-खुशी तैयार हो गए। ग्राम्य-वातावरण में रहकर उन्होंने प्रकृति का आनन्द ही नहीं उठाया, बल्कि किसानों और अन्य साधारण लोगों के दुख-दर्द को भी निकट से देखा। अब वे पूरी तरह साहित्य-साधना में लग गए।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की रचना करके बंगला भाषा और साहित्य की महान सेवा की। आगे चलकर वे विश्व-कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। ''काबुलीवाला'' उनकी कहानियों में विशेष स्थान रखती है। उनका उपन्यास ''गोरा'' भी सब को प्रभावित करता है। रवीन्द्रनाथ के साहित्य में प्रकृति-प्रेम और मानवतावाद का बोलबाला है।

सन् 1915 ई. में रवीन्द्रनाथ की भेंट गांधीजी से हुई। गांधीजी शांतिनिकेतन में शिक्षा का अभिनव प्रयोग देखने आए थे। जब दोनों महान विभूतियाँ आमने-सामने हुई तो एक आश्चर्यजनक घटना घटी। रवीन्द्रनाथ ने गांधीजी को ''महात्मा'' कहकर सम्बोधित किया और गांधीजी ने रवीन्द्रनाथ को ''गुरुदेव'' कहकर पुकारा। तभी से ये दोनों शब्द विश्व के इन दो महान लोगों के नामों के साथ जुड़ गए।

हमारे देश के राष्ट्र-गान की रचना विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने ही की थी।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

स्मरण = स्मृति, याद।
अगाध = अपार, अथाह, अधिक।
सानिध्य = सामीप्य, नजदीकी।
मानवतावाद = मनुष्यता की विचार-धारा।
बोलबाला = मान, प्रतिष्ठा वाला।
अभिनव = नया, ताजा।
विभूति = शक्ति, शक्ति-सम्पन्न।

2. उत्तर दीजिए :

(क) ''गीतांजलि'' क्या है ?
(ख) ''गीतांजलि'' की रचना कब हुई थी ?
(ग) रवीन्द्रनाथ को कब किसके लिए ''नोबल पुरस्कार'' मिला था ?
(घ) रवीन्द्रनाथ को किससे अगाध प्रेम था ?
(ङ) रवीन्द्रनाथ किसके समर्थक थे ?
(च) रवीन्द्रनाथ क्या चाहते थे ?
(छ) रवीन्द्रनाथ ने कब और कहाँ शांति-निकेतन की स्थापना की थी ?
(ज) रवीन्द्रनाथ का जन्म कब हुआ था ?
(झ) किस कारण से पिता ने रवीन्द्रनाथ को बोलपुर गाँव में भेज दिया ?
(ञ) रवीन्द्रनाथ को उच्च शिक्षा के लिए कहाँ भेजा गया ?
(ट) जमींदारी की देखभाल के लिए गाँव भेजते समय रवीन्द्रनाथ ने क्या सोचा ?
(ठ) ग्राम्य-वातावरण में रहकर रवीन्द्रनाथ ने कौन-सा अनुभव प्राप्त किया ?
(ड) रवीन्द्रनाथ ने अपनी भाषा और साहित्य की सेवा कैसे की ?
(ढ) गांधीजी शांति-निकेतन में क्यों आए थे ?

(ण) रवीन्द्रनाथ और गांधीजी एक दूसरे को क्या कहकर सम्बोधित करते थे ?
(त) राष्ट्र-गान की रचना किसने की ?
(थ) हमारे देश के राष्ट्र-गान के बारे में आपके विचार प्रकट कीजिए।
(द) मणिपुरी भाषा के कुछ प्रसिद्ध लेखकों के नाम बताइए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

स्मरण --

अगाध --

सानिध्य --

व्यतीत --

ग्राम्य --

बोलबाला --

अभिनव --

सम्बोधित --

4. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और खण्ड "क" तथा "ख" के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
रवीन्द्रनाथ को पेड़-पौधों के बीच	रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की थी।
बोलपुर में रवीन्द्रनाथ का	साहित्य-साधना में लग गए।
रवीन्द्रनाथ पूरी तरह	विश्व-कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए।
आगे चल कर रवीन्द्रनाथ	प्रकृति से परिचय हुआ।
राष्ट्रगान की रचना	अपूर्व आनन्द मिलता था।

----

5. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) रवीन्द्रनाथ को प्राचीन संस्कृति और सभ्यता से अगाध प्रेम था। ☐

(ख) देवेन्द्रनाथ ने बोलपुर में शांति-निकेतन की स्थापना की। ☐

(ग) पिता ने रवीन्द्रनाथ को जमींदारी की देखभाल के लिए गाँव भेजा। ☐

(घ) रवीन्द्रनाथ ने गाँव में साधारण लोगों के दुख-दर्द को निकट से देखा। ☐

(ङ) गांधीजी ने रवीन्द्रनाथ को ''गुरुदेव'' कहकर पुकारा। ☐

6. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

(क) ''को'' का प्रयोग प्राय : सजीवों के साथ होता है, निर्जीवों के साथ प्राय : नहीं।
जैसे –

माँ हमको खिलाती है।	माँ खाना खिलाती है।
अध्यापक छात्रों को पढ़ाते हैं।	अध्यापक पुस्तक पढ़ते हैं।
उन्होंने हमको देखा।	उन्होंने चित्र देखा।

(ख) किन्तु कभी-कभी सजीवों के साथ ''को'' का प्रयोग नहीं होता। जैसे –

मैंने साँप देखा।

हमने एक पागल आदमी देखा।

वह मछली पकड़ता है।

(ग) जहाँ कर्म पर जोर देना हो, वहाँ ''को'' का प्रयोग होता है। जैसे –

मैं इस सेव को खाऊँगा।

हमने इस कमरे को साफ किया।

(घ) यदि वाक्य में दो कर्म हों तो सजीव कर्म में ''को'' लगता है और निर्जीव में नहीं लगता। जैसे –

उसने अपने पिता को सारी बातें बता दीं।

अध्यापक छात्रों को गणित पढ़ाते हैं।

अमीर ने गरीब को दान दिया।

तोम्बा ने अचौ को पुस्तक दी।

इस प्रकार के वाक्यों में ''को'' लगने वाला सजीव कर्म गौण कर्म है और बिना ''को'' का निर्जीव कर्म मुख्य कर्म है।

7. सही जगह ''को'' का प्रयोग कीजिए।

(क) राम हुसैन बुलाता है।

(ख) गायक हम गीत सुनाता है।

(ग) मालिक ने नौकर बहुत डाँटा।

(घ) उसने बैल मारा।

(ङ) माँ बच्चे दूध पिलाती है।

Z8U4F2

पाठ-आठ

चन्द्रनदी

भूधश, अभिनव, आकर्षक, हिलोर, व्योम, हिंस्र, परिपूर्ण, कँटीला, झाड़ी, समतल, दूब, करुणा।

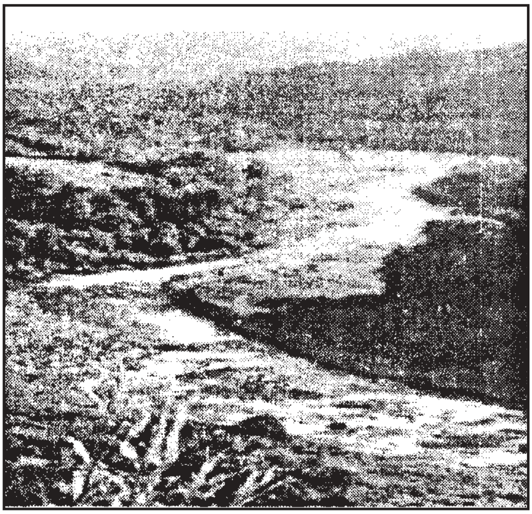

दिख रहा दूर यह भूधर कितना सुन्दर !
अभिनव मोहक आकर्षक,
शांति भरी उठ रहीं हिलोरें।
बढ़ा चढ़ा है नील गगन से।
जा मिला है क्या नील व्योम से यह ?
देखने से एक बार,
हटती नहीं दृष्टि,
लेकिन क्या सचमुच है यह उसका रंग ?
नहीं, दिखेगा पहुँचने पर निकट।

हिंस्र पशुओं से परिपूर्ण, घना
जंगल कँटीली झाड़ियों का,
थोड़ी सी समतल भूमि दूब भरी।
करुणा भरा दृश्य चन्द्रनदी के निकट।

(कवि कमल की कविता का अनुवादांश)

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

भूधर	=	पहाड़, पर्वत।
अभिनव	=	नया, ताजा।
आकर्षक	=	रोचक, खींचने वाला।
हिलोर	=	जल-तरंग, लहर।
व्योम	=	आकाश, गगन।
हिंस्र	=	घातक, जंगली, खूंखार।
कँटीला	=	काँटेदार।
समतल	=	चौरस।
दूब	=	दूर्वा, एक प्रसिद्ध घास, हरिता।

2. उत्तर दीजिए :

(क) भूधर दूर से कैसा दिख रहा है ?
(ख) कैसी हिलोरें उठ रही हैं ?
(ग) किससे कवि की दृष्टि नहीं हटती है ?
(घ) उस भूधर के निकट पहुँचने पर क्या दिखाई देगा ?
(ङ) चन्द्रनदी के निकट का दृश्य कैसा है ?
(च) 'चन्द्रनदी' कविता का मूल भाव लिखिए।
(छ) मणिपुर की किसी नदी के बारे में कुछ वाक्य लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

भूधर ---

अभिनव ---

आकर्षक ---

हिलोर ---

व्योम ---

परिपूर्ण ---

कंटीली ---

समतल ---

4. पढ़िए और समझिए :

भूधर - पुल्लिंग

शांति - स्त्रीलिंग

हिलोर - स्त्रीलिंग

गगन - पुल्लिंग

व्योम - पुल्लिंग

दृष्टि - स्त्रीलिंग

जंगल - पुल्लिंग

झाड़ी - स्त्रीलिंग

दूब - स्त्रीलिंग

दृश्य - पुल्लिंग

पाठ-नौ

यातायात के नियम

राजमार्ग, यातायात, व्यापक, जनपथ, वाहन, सावधानी, पट्टी, चौराह, बत्ती, दुर्घटना।

(आठवीं कक्षा के विद्यार्थीगण। तीसरी घण्टा। अध्यापक का प्रवेश। विद्यार्थी खड़े होकर अध्यापक को प्रणाम करते हैं।)

विद्यार्थी - प्रणाम गुरुजी।

अध्यापक - प्रणाम ! सभी बैठ जाओ।

विद्यार्थी - गुरुजी, आपने कल कहा था कि आज यातायात के बारे में कुछ नियम बताएँगे। अब बताइए।

अध्यापक - अच्छा, तुम लोग ध्यान से सुनो। विश्व भर में यातायात के सब से सरल और व्यापक साधन हैं – सड़क यातायात और रेल-यातायात। हमारे देश में भी सब से महत्वपूर्ण और प्रमुख साधन रेल-गाड़ियाँ और मोटर-गाड़ियाँ हैं। इसके बाद हवाई-जहाज तथा पानी के जहाज का स्थान है।

विद्यार्थी - गुरुजी, भारत के सभी शहर किससे जुड़े जाते हैं ?

अध्यापक - सुनो, वह भी बताता हूँ। भारत के सभी शहर मोटर-गाड़ियाँ जा सकने वाली सड़कों से जुड़े हुए हैं। मोटर-गाड़ी यातायात का सबसे सरल और व्यापक साधन है। भारत की सड़कों को तीन प्रकार से विभाजित किया जा सकता है - (क) अन्तर्राष्ट्रीय जनपथ, (ख) राष्ट्रीय राजमार्ग और (ग) राज्य के अन्तर्गत नगरों और गाँवों को जोड़ने वाली सड़कें। इन सड़कों पर वाहनों और पैदल चलने वालों के लिए नियमों का पालन करना अनिवार्य है। इन्हें यातायात का नियम कहा जाता है।

विद्यार्थी - गुरुजी, यातायात के कौन-कौन से नियम होते हैं ?

अध्यापक - यातायात के अनेक नियम होते हैं। पैदल चलनेवालों को सड़क के बाईं ओर बने फुटपाथ पर ही चलना चाहिए। यदि किसी सड़क पर फुटपाथ नहीं बना हो तो सब को बाईं ओर के किनारे पर ही चलना चाहिए। यदि सड़क पार करनी हो तो ''जेबरा क्रॉस रोड'' का प्रयोग करना चाहिए। पहले बाईं ओर देखकर पता लगाना चाहिए कि दूर तक कोई वाहन तो नहीं आ रहा है; फिर दाईं ओर देखना चाहिए। उसके बाद एक बार फिर बाईं ओर देखकर सावधानी के साथ सड़क पार करनी चाहिए। जहाँ ''जेबरा क्रॉस रोड'' हो, वहाँ भी सड़क पार करते समय इन सारी सावधानियों का पालन करना चाहिए।

विद्यार्थी - गुरुजी, ''जेबरा क्रोस रोड'' किसे कहते हैं ?

अध्यापक - यह सड़क पार करने का एक विशेष स्थान होता है। सड़क की चौड़ाई पर सफेद और काले रंग से टेढ़ी पट्टियाँ बनी होती हैं। इनका उद्देश्य सड़क पार करने के स्थान की पहचान बताना होता है। इस पट्टियों वाली जगह को ही ''जेबरा क्रॉस रोड' कहा जाता है।

विद्यार्थी - गुरुजी, सड़क पर वाहन चलाते समय कौन-कौन सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए ?

अध्यापक - सब से पहले सावधानी तो यह है कि कभी भी वाहन निर्धारित गति-सीमा से अधिक गति से नहीं चलाना चाहिए। दूसरी बात यह कि चौराहा पार करते समय वहाँ यातायात-खंभों पर लगी बत्तियों के संकेतों का पूरी तरह से पालन करना चाहिए।

विद्यार्थी - गुरुजी, यातायात-खंभा क्या होता है ?

अध्यापक - चौराहों पर यातायात को नियन्त्रित करने के लिए खंभे लगे रहते हैं। इनपर तीन रंगों की बत्तियाँ लगी रहती हैं। सब से ऊपर लाल, बीच में पीली और सब से नीचे हरी बत्ती होती हैं। लाल बत्ती रुकने और हरी जाने का संकेत करती हैं। बीच वाली पीली बत्ती जाने के पूर्व तैयार होने का संकेत करती है। सभी वाहन-चालकों को इन बत्तियों के संकेत समझ कर वाहन चलाना चाहिए।

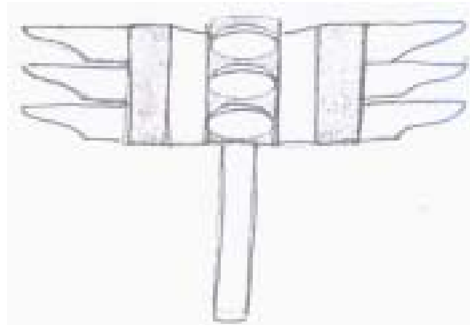

विद्यार्थी - यह तो बहुत अच्छा नियम है।

अध्यापक - हाँ-हाँ, सारे नियम अच्छे होते हैं। सभी लोगों को हमेशा यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए। ऐसा करके सड़क दुर्घटनाओं को कम किया जा सकता है।

विद्यार्थी - गुरुजी, आज आपने हमें यातायात के नियमों की जानकारी दी है। धन्यवाद गुरुजी।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

यातायात = आना-जाना, गमनागमन।

राजमार्ग = मुख्य सड़क, राज्य द्वारा विशेष घोषित मार्ग।

वाहन = घोड़ा, रथ, गाड़ी या अन्य कोई सवारी।

चौराहा = वह जगह जहाँ चार रास्ते मिलें।

2. उत्तर दीजिए :

(क) यातायात के सब से सरल और व्यापक साधन क्या है ?

(ख) भारत के सभी शहर किससे जुड़े हुए हैं ?

(ग) भारत की सड़कों को कितने प्रकार से विभाजित किया जा सकता है और क्या-क्या हैं?

(घ) यातायात के नियम किसे कहते हैं ?

(ङ) यातायात के कौन-कौन से नियम होते हैं ?

(च) जेबरा क्रॉस रोड किसे कहते हैं ?

(छ) सड़क पर वाहन चलाते समय कौन-कौन सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए ?

(ज) यातायात-खंभा क्या होता है ?

(झ) यातायात-खंभे पर लगी तीन रंगों की बत्तियाँ क्या-क्या संकेत करती हैं ?

(ञ) सड़क दुर्घटनाओं को कैसे कम किया जा सकता है ?

(ट) यातायात के नियमों का पालन न करने से क्या-क्या मुसीबतें आ सकती हैं ?

(ठ) मणिपुर की यातायात-व्यवस्था के बारे में आपके विचार प्रकट कीजिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

यातायात --

व्यापक --

राजमार्ग --

वाहन --

चौराहा --

संकेत --

दुर्घटना --

बत्ती --

4. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) मोटर-गाड़ी यातायात का सब से सरल और व्यापक साधन है। ☐

(ख) वाहनों और पैदल चलने वालों के लिए कोई नियम नहीं है। ☐

(ग) जेबरा क्रॉस रोड सड़क पार करने का एक विशेष स्थान होता है। ☐

(घ) यातायात-खंभे पर तीन रंगों की बत्तियाँ लगी रहती हैं। ☐

(ङ) हमें हमेशा यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए। ☐

5. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) इसके बाद हवाई-जहाज ---------------------------------------।

(ख) यदि सड़क पार करनी हो तो ---------------------------------------।

(ग) जेब्रा क्रोष रोड का उद्देश्य सड़क पार करने के -------------------------।

(घ) वाहन-चालकों को बत्तियों के ----------------------------------।

(ङ) ऐसा करके सड़क दुर्घटनाओं को ---------------------------------।

6. पढ़िए और याद रखिए :

फुटपाथ पर चलना चाहिए।

जेबरा क्रॉस रोड का प्रयोग करना चाहिए।

ध्यान देकर पता लगाना चाहिए।

इन सारी सावधानियों का पालन करना चाहिए।

समय पर काम होना चाहिए।

''चाहिए'' का प्रयोग करते समय मुख्य क्रिया का रूप ''धातु+ना'' होना चाहिए, जैसे – चलना चाहिए, करना चाहिए, लगना चाहिए, पूछना चाहिए, होना चाहिए, आदि।

7. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

इस पठित पाठ में एक वाक्य है – ''भारत के सभी शहर मोटर-गाड़ियाँ जा सकने वाली सड़कों से जुड़ हुए हैं''। इस वाक्य में ''भारत के सभी शहर'' कर्ता है, ''मोटर-गाड़ियाँ जा सकनेवाली सड़कों से'' करण (साधन) है और ''जुड़े हुए हैं'' क्रिया है। कर्ता में तीन पद हैं, करण में चार पद हैं और क्रिया में भी तीन पद हैं। प्रत्येक व्याकरणिक स्थान पर एक से अधिक पदों के समूह का प्रयोग है, इस प्रकार के पदों के समूह को पदबन्ध कहते हैं।

पदबन्ध मुख्य रूप से चार प्रकार के होते हैं –

(क) संज्ञा पदबन्ध

(ख) विशेषण पदबन्ध

(ग) क्रिया पदबन्ध

(घ) क्रिया-विशेषण पदबन्ध

(क) संज्ञा पदबन्ध :– इस प्रकार के पदबन्ध में मुख्य पद संज्ञा होता है। जैसे – भारत के सभी **शहर**, मोटर-गाड़ियाँ जा सकते वाली **सड़क**, अच्छा **लड़का**, चाओबा का **पुत्र**, आते-जाते **लोग** आदि।

(ख) विशेषण पदबन्ध :– इस प्रकार के पदबन्ध में मुख्य पद विशेषण होता है। जैसे - बहुत **सुन्दर**, एकदम **सफेद**, भीम-सा **बलवान** आदि।

(ग) क्रिया पदबन्द :– इस प्रकार के पदबन्ध में मुख्य पद क्रिया होता है। जैसे - **खाता** है, **जुड़े** हुए हैं, **गिर** पड़ा, खा रहा है, **कर** सकता हूँ आदि।

(घ) क्रिया-विशेषण पदबन्ध :– इस प्रकार के पदबन्ध में क्रिया-विशेषण मुख्यपद के स्थान पर होता है। जैसे - पढ़ते-पढ़ते, रोटे हुए, मेरे घर के चारों ओर, सड़क के किनारे आदि।

पाठ-दस

मणिपुर के घरेलू उद्योग

T9R1X6

उद्योग, हथकरघा, मशहूर, फुरसत, बिछावन, रजाई, टिकाऊपन, अंचल, पर्याप्त, टोकरी, संचालित, उपरोक्त, आमदनी, भूमिका, अर्थ-व्यवस्था, उपहार।

इम्फाल
४ जुलाई, २००४

प्रिय मित्र मनमोहन,

सप्रेम नमस्ते।

तुम्हारा पत्र पाकर मुझे बड़ी खुशी हुई। यह और भी खुशी की बात है कि तुम अपने छोटे भाई के साथ मणिपुर घूमने आ रहे हो। यहाँ जुलाई-अगस्त तक तो वर्षा होती है, इसलिए सितम्बर-अक्टूबर में आना। मैं तुम दोनों के ठहरने की व्यवस्था अपने घर पर ही करूँगा।

तुम मणिपुर के घरेलू उद्योगों के बारे में जानना चाहते हो। लो, इस पत्र में संक्षेप में लिख रहा हूँ।

मणिपुर में दो ही प्रमुख घरेलू उद्योग हैं। पहला है – हथकरघे का उद्योग और दूसरा – बाँस तथा बेंत का उद्योग। ये दोनों उद्योग सालों पुराने हैं और अच्छे खासे चलते हैं। मणिपुर का हथकरघा पूरे भारत में मशहूर है। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि मणिपुर के लगभग हर घर में हथकरघा होता है। मणिपुर की अधिकतर महिलाओं को कपड़ा बुनने की विद्या आती है और वे इस कला में काफी निपुण होती हैं। करघे से कपड़े बुनना यहाँ की महिलाओं का शौक भी है। जब उन्हें घरेलू काम-काज से फुरसत मिलती है, तब वे करघे पर कपड़ा बुनती हैं। वे अधिकतर खुदै, फनेक, चादर, बिछावन के कपड़े, साड़ी आदि बुनती हैं। इनके अलावा वे मणिपुरी रजाई, ''लशिङ्-फि'' तथा पर्दा, थैली, कमीज, कुरता, ब्लाउज, पगड़ी आदि के लिए भी कपड़े बुनती हैं।

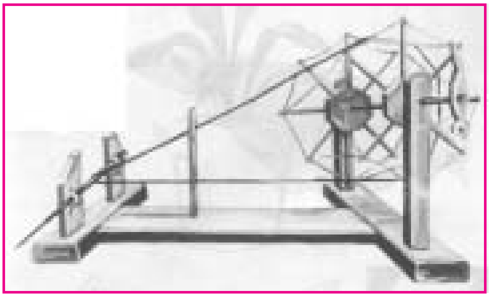

मणिपुरी हथकरघे के उत्पादन की विशेषता है, सुन्दर डिजाइन, कपड़ों का पक्का रंग और टिकाऊपन। मणिपुर के बाहर इनकी माँग बहुत है। यहाँ सूती, रेशमी और ऊनी कपड़े बुने जाते हैं।

दूसरा घरेलू उद्योग ''बाँस और बेंत'' का है। यह उद्योग मुख्यत : पुरुषों का है। मणिपुर पर्वतीय अंचल में बसाया हुआ राज्य है। इसमें चारों ओर जंगलों से भरी हुई पर्वतमालाएँ फैली हुई हैं। इन जंगलों में बाँस और बेंत पर्याप्त मात्रा में उगते हैं। इनसे विभिन्न प्रकार की टोकरियाँ, मेजें, कुर्सियाँ, मोढ़े, मछली पकड़ने के जाल आदि बनाए जाते हैं। ये सामान काफी आकर्षक और सुन्दर होते हैं।

हाँ, यहाँ एक और छोटा-सा घरेलू उद्योग है। यह है – रेशम के कीड़े पालने का उद्योग। यह मुख्यत: महिलाओं द्वारा संचालित उद्योग है।

उपरोक्त घरेलू उद्योग खेती के बाद मणिपुरी घरों की आमदनी के दूसरे साधन हैं। राज्य की अर्थ-व्यवस्था में इन उद्योगों की बड़ी भूमिका है। मनमोहन, तुम मणिपुर आ रहे हो। उस समय अपनी आँखों से इन उद्योगों को देखना। मणिपुरी हथकरघे पर बुने हुए कुछ कपड़े और बाँस तथा बेंत से बनी हुई चीजें मैं उपहार में दूँगा।

माँजी और पिताजी को मेरा प्रणाम कहना न भूलना।

तुम्हारा मित्र
अकाम तोम्बीनौ सिंह

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

उद्योग = धन्धा।
घरेलू उद्योग = घर पर लघु मशीनों से चलाए जाने वाले धन्धे।
हथकरघा = हाथ से कपड़ा बुनने की लकड़ी की मशीन।
निपुण = कुशल।
मशहूर = प्रसिद्ध।
फुरसत = अवकाश का समय, काम न रहने का समय।
बिछावन = बिस्तर के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले वस्त्र।
रजाई = ठण्ड से बचने के लिए रुई का ओढ़ने का वस्त्र।
टिकाऊपन = स्थायित्व।
पर्याप्त = काफी।
उपहार = भेंट।

2. उत्तर दीजिए :

(क) मनमोहन किसके साथ मणिपुर घूमने आ रहा है ?
(ख) मणिपुर के दो प्रमुख घरेलू उद्योग कौन-कौन से हैं ?

(ग) मणिपुर के लगभग हर घर में क्या होता है ?
(घ) मणिपुर की महिलाएँ किस काम में निपुण होती हैं ?
(ङ) मणिपुर की महिलाओं का शौक क्या है ?
(च) महिलाएँ क्या-क्या बुनती हैं ?
(छ) मणिपुरी हथकरघे के उत्पादन की विशेषता क्या है ?
(ज) मणिपुर कहाँ बसा हुआ राज्य है ?
(झ) बाँस और बेंत से क्या-क्या बनाया जाता है ?
(ञ) मणिपुर के एक और घरेलू उद्योग का नाम बताइए।
(ट) पाठ में उल्लिखित घरेलू उद्योगों के अलावा मणिपुर में कौन-कौन से घरेलू उद्योग हो सकते हैं ? उनके नाम बताइए।
(ठ) मणिपुर में प्रचलित घरेलू उद्योगों में से आपको कौन-सा उद्योग पसन्द है और क्यों ?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

मशहूर --
फुरसत --
टिकाऊपन --
पर्याप्त --
उपरोक्त --
आमदनी --
भूमिका --
शौक --
संचालित --
उपहार --

4. खाली जगह भरिए :

(क) मणिपुर का --------------- पूरे भारत में --------------- है।

(ख) यहाँ सूती, ----------------- और ------------- कपड़े बुने जाते हैं।

(ग) इन जंगलों में ----------- और ----------- पर्याप्त ----------- में उगते हैं।

(घ) ये दोनों ----------------- सालों ---------------------- है।

(ङ) ये ------------- काफी ------------ और ---------------- होते हैं।

5. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) मणिपुर के लगभग हर घर में हथकरघा होता है। ☐

(ख) करघे से कपड़े बुनना पुरुषों का काम है। ☐

(ग) करघे से कपड़े बुनना मणिपुर की महिलाओं का शौक है। ☐

(घ) बाँस और बेंत का काम मुख्यत: महिलाओं का है। ☐

(ङ) राज्य की अर्थ-व्यवस्था में घरेलू उद्योग की बड़ी भूमिका है। ☐

6. अर्थ लिखिए :

उद्योग = --------------------

निपुण = --------------------

मशहूर = --------------------

पर्याप्त = --------------------

आमदनी = --------------------

उपहार = --------------------

7. सन्धि-विच्छेद कीजिए :

निष्पाप - ----------------------------

अधोगति - ----------------------------

मनोहर - ----------------------------

निर्गुण - ----------------------------

निराशा - ----------------------------

5. पढ़िए और समझिए :

हमारे कई रिश्तेदार या मित्र हम से दूर अन्य नगरों या गाँवों में रहते हैं। हमारा मन कहता है कि हम उन्हें अपने बारे में बताएँ और उनके बारे में भी जानकारी प्राप्त करें। विवाह आदि के अवसर पर भी हम अपने रिश्तेदारों को बुलाना चाहते हैं। इसके लिए हमें एक कागज पर अपनी बात लिखकर डाकघर या किसी माध्यम की सहायता से अपने सम्बन्धियों तक वह कागज पहुँचाना पड़ता है। इस कागज पर हम विशेष तरीके से सब कुछ लिखते हैं। अपना पता, तारीख, उचित सम्बोधन, प्रणाम आदि लिखकर फिर अपना सन्देश लिखते हैं। और भी बहुत कुछ नियमानुसार लिखना आवश्यक होता है। यह पत्र कहलाता है।

पत्र के आठ अंग होते हैं। इन्हें पत्र-लेखन के नियम माना जाता है। जैसे –

१. पत्र-लेखक का पता और तारीख –

पत्र के बिलकुल ऊपर दाएँ कोने पर पत्र-लेखक का पता रहता है। जिसे आप पत्र लिख रहे हैं, यदि आपका पता मालूम हो तो अपना पता पूरान लिखकर केवल स्थान का नाम लिखिए और उसके नीचे तारीख। जैसे –

उरिपोक, इम्फाल
२-४-२०१०

२. सम्बोधन –

पता और तारीख से कुछ नीचे बाईं ओर सम्बोधन लिखा जाता है। सम्बोधन बहुत महत्वपूर्ण होता है। जिस व्यक्ति को पत्र लिखना है, उसके लिए उपयुक्त सम्बोधन लिखना चाहिए। जैसे –

बड़ों के लिए – श्रद्धेय, परमपूज्य, आदरणीय, माननीय, मान्यवर, माननीया आदि।

बराबर वालों के लिए – प्रियवर, मित्रवर, बंधुवर, प्रिय भाई , प्रिय सहेली आदि।

छोटों के लिए – परमप्रिय, प्रिय (नाम), आयुष्मान (नाम) आदि।

३. अभिवादन –

अभिवादन में भी सम्बोधन के अनुरूप शब्द लिखना चाहिए। जैसे –

बड़ों को – प्रणाम, नमस्कार, चरणस्पर्श, सादर प्रणाम आदि।

बराबरवालों को – नमस्ते, नमस्कार आदि।

छोटों को – प्यार, शुभाशीष, आशीर्वाद, प्रसन्न रहो आदि।

४. पत्र का कलेवर –

यही पत्र का मुख्य अंग होता है। अभिवादन के नीचे बाईं ओर थोड़ी जगह छोड़कर मूल पत्र प्रारम्भ किया जाता है। समाचार या जिस उद्देश्य से पत्र लिखा जाता है, उसका वर्णन नहीं होता है। मूल पत्र में यह ध्यान रखना चाहिए कि वे न तो बेकार में बहुत लम्बा हो और न इतना संक्षिप्त हो कि अपेक्षित सूचना न दी जा सके।

५. कलेवर की समाप्ति –

पत्र के कलेवर की समाप्ति प्राय: कुछ वाक्यों या शब्दों से की जाती है। जैसे – शेष फिर, शेष मिलने पर, सधन्यवाद, कष्ट के लिए क्षमा, सेवायोग्य, पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में आदि।

६.　सम्बन्ध-निर्देश –

यह हस्ताक्षर के पूर्व प्रयुक्त शब्दावली है। जिस व्यक्ति को पत्र लिखा जा रहा है, उसके लिए अपने सम्बन्ध के अनुसार पत्र-लेखक पत्र के अन्त में हस्ताक्षर के पूर्व एक या अधिक सम्बन्ध-दयोतक शब्दों का प्रयोग करता है। जैसे –

बड़ों को लिखे गए पत्रों में – आज्ञाकारी, कृपाकांक्षी, विनीत, स्नेह-भाजन, आपका सेवक आदि।

बराबरवालों के पत्रों में – भवदीय, अभिन्न, आपका ही, तुम्हारा आदि।

छोटों को लिखे गए पत्रों में – सस्नेह शुभैषी, तुम्हारा शुभचिन्तक, शुभाकांक्षी आदि।

७.　हस्ताक्षर –

सम्बन्ध-निर्देश के ठीक नीचे दाईं तरफ साफ अक्षरों में हस्ताक्षर करने चाहिए।

८.　पत्र पानेवाले का पत्र –

पत्र पाने वाले का सही पता लिफाफे तथा पोस्ट-कार्ड में निर्धारित स्थान पर लिखा जाता है। पते में पहले पत्र पाने वाले का नाम, फिर गाँव व मुहल्ला, डाकखाना, जिला और अन्त में राज्य लिखा जाता है। पिन कोड देने से पत्र जल्दी पहुँचने की सम्भावना रहती है। जैसे –

सापम तोम्बा सिंह

गाँव/मुहल्ला : लैशाङथेम लैकाइ
डाकघर : शिङजमै
जिला : पश्चिमी इम्फाल
पिन कोड : ७९५००८

पाठ-ग्यारह

खिलाड़ी : राष्ट्र के गौरव

Q9T6L9

मनोरंजन, मैत्री, संदेश, सम्मान, चुम्बक, बारीकी, उड़नपरी, विख्यात, धाविका, प्रतियोगिता, स्वर्ण-पदक, ख्याति, भारोत्तोलन, मुक्केबाजी, अनुमान।

खेलों का सम्बन्ध स्वास्थ्य और मनोरंजन के साथ-साथ विश्व-शांति तथा विश्व-भाईचारे की भावना से भी है। जब एक देश के खिलाड़ी किसी दूसरे देश में खेलने जाते हैं, तो वे अपने साथ प्रेम, मैत्री और एकता का सन्देश ले जाते हैं। खिलाड़ी जब जीतते हैं तो इससे देश का सम्मान भी बढ़ता है।

भारत भूमि ने विविध खेलों में नाम कमाने और देश का नाम ऊँचा करने वाले अनेक खिलाड़ियों को जन्म दिया है।

हॉकी का जादूगर कहे जाने वाले मेजर ध्यानचंद का जन्म सन्, 1904 में हुआ था। जैसे लोहे का टुकड़ा चुम्बक की ओर खिंचा चला आता है, वैसे ही गेंद ध्यानचंद की हॉकी-स्टिक की ओर चली आती थी। एक बार गेंद पर कब्जा करने के बाद उसे गोल में पहुँचा कर ही छोड़ते थे। मेजर ध्यानचंद के कारण ही भारत ने एम्सटर्डम, लास एंजेलिस और बर्लिन ओलेम्पिक में हॉकी का स्वर्ण-पदक जीता था। भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें 'पद्म-भूषण' अलंकरण प्रदान किया था।

महान क्रिकेट खिलाड़ी बीनू माकण्ड का जन्म 12 अप्रैल, 1917 ई. को जामनगर में हुआ था। उनका असली नाम मल्वानट्राइ माकण्ड था। स्कूल के साथी उन्हें वीनू कहकर बुलाते थे। बड़ा होने पर

भी यही नाम लोकप्रिय हुआ। वीनू माकण्ड क्रिकेट की बारीकी से परिचित होने के साथ-साथ एक अनुशासनप्रिय खिलाड़ी भी थे। उन्हें सन् 1935-36 ई. में अस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलने वाली भारतीय टीम में पहली बार स्थान दिया गया था।

भारत की उड़नपरी के नाम से दुनिया भर में विख्यात पी.टी. उषा का जन्म सन् 1964 ई. में हुआ था। अपने समय में वे भारत की सर्वश्रेष्ठ महिला धाविका मानी जाती थीं। उन्होंने अनेक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अपने देश के लिए स्वर्ण-पदक प्राप्त हुआ था।

खेल की दुनिया में स्वर्णभूमि मणिपुर भी किसी से पीछे नहीं है। इस राज्य के अनेक खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है। हॉकी में थोइबा, टिकेन और नीलकमल को भला कौन नहीं जानता। इन तीनों ने भारतीय हॉकी को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। भारोत्तोलन में कुंजरानी और सनामचा चनु का नाम संसार भर के खेल-प्रेमियों में आदर के साथ लिया जाता है। मुक्केबाजी में देश का गौरव बढ़ाने वाले दिङ्कू सिंह भी मणिपुर में ही जन्मे हैं। उनके महत्व का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इम्फाल नगर की एक सड़क का नाम ही ''दिङ्कू रोड'' रख दिया गया है।

हमारे देश के खिलाड़ियों की मुख्य विशेषता है, खेल-भावना की रक्षा करना और टीम-भावना से खेलना। हमें महान खिलाड़ियों पर गर्व है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

मनोरंजन	=	मनबहलाव, दिल खुश होना।
मैत्री	=	मित्रता, दोस्त।
सन्देश	=	संवाद, आदेश, समाचार।
सम्मान	=	इज्जत, आदर, प्रतिष्ठा।
चुम्बक	=	एक तरह का पत्थर/लोहे को अपनी ओर खींचता है।
कब्जा	=	दखल, पकड़, काबू।
बारीकी	=	सूक्ष्मता।
विख्यात	=	प्रसिद्ध, मशहूर।
धाविका	=	दौड़ने वाली।
प्रतियोगिता	=	होड़, प्रतिद्वन्द्विता, प्रतियोगी होने का भाव।
पदक	=	तमगा, मेडल।
ख्याति	=	प्रसिद्धि, प्रशंसा।
भारोत्तोलन	=	वैट्थ-लिफ्टिंग (वेट-लिफ्टिंग)।
मुक्केबाजी	=	घूँसों की लड़ाई।
अनुमान	=	अंदाजा।

2. उत्तर दीजिए :

(क) खेलों का सम्बन्ध किससे है ?

(ख) एक देश के खिलाड़ी जब किसी दूसरे देश में खेलने जाते हैं, तो वे क्या ले जाते हैं ?

(ग) भारत भूमि ने कैसे खिलाड़ियों को जन्म दिया है ?

(घ) मेजर ध्यानचंद कौन थे ?

(ङ) हॉकी के खेल में मेजर ध्यानचंद की क्या विशेषता थी ?

(च) राष्ट्रपति ने ध्यानचंद को कौन-सा अलंकरण प्रदान किया था ?

(छ) वीनू माकण्ड कौन थे और उनका जन्म कहाँ हुआ था ?
(ज) वीनू का असली नाम क्या था ?
(झ) वीनू माकण्ड कैसे खिलाड़ी थे ?
(ञ) भारत की उड़नपरी कौन थी ?
(ट) मणिपुर के राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी कौन-कौन हैं ?
(ठ) हमारे देश के खिलाड़ियों की मुख्य विशेषता क्या है ?
(ड) राष्ट्रीय खेलों में मणिपुर के खिलाड़ियों के योगदान पर कुछ वाक्य लिखिए।
(ढ) ''खेल और खिलाड़ी'' शीर्षक पर एक छोटा-सा लेख लिखने का प्रयास कीजिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

मैत्री --

सम्मान --

कब्जा --

अलंकरण --

बारीकी --

विख्यात --

अनुमान --

4. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और खण्ड ''क'' और ''ख'' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
खिलाड़ी जब जीतते हैं	एक अनुशासनप्रिय खिलाड़ी थे।
भारत के राष्ट्रपति ने ध्यानचंद को	किसी से पीछे नहीं है।
वीनू माकण्ड	भारत की सर्वश्रेष्ठ महिला धाविका थीं।
अपने समय में पी.टी. उषा	''पद्म-भूषण'' अलंकरण प्रदान किया था।
खेल की दुनिया में मणिपुर	तो इससे देश का सम्मान भी बढ़ता है।

----

5. खाली जगह भरिए :

(क) खिलाड़ी अपने साथ ----------------------------- सन्देश ले जाते हैं।

(ख) गेंद ध्यानचंद की ---------------------------- चली आती है।

(ग) बड़ा होने पर भी ----------------------------- हुआ।

(घ) हॉकी में ------------------------- को भला कौन नहीं जानता।

(ङ) इम्फाल नगर की एक सड़क ----------------- रख दिया गया है।

(च) हमें -- गर्व है।

6. ध्यान से देखिए और खण्ड ''क'' और ''ख'' के शब्दों को सही रूप में मिलाकर लिखिए :

क	ख	क	ख
ध्यानचंद	मुक्केबाज	--------------	--------------
कुंजरानी	धाविका	--------------	--------------
पी.टी. उषा	हॉकी	--------------	--------------
दिङ्कू	क्रिकेट	--------------	--------------
वीणु माकण्ड	हॉकी	--------------	--------------
नीलकमल	भारोत्तोलन	--------------	--------------

7. पढ़िए और समझिए :

वीनु माकण्ड क्रिकेट की बारीकियों से परिचित होने के साथ-साथ एक अनुशासन प्रिय खिलाड़ी भी थे।

तोम्बा फुटबॉल का खिलाड़ी है, साथ-साथ हॉकी भी खेलता है।

हम पिता होने के साथ-साथ किसी माँ के पुत्र भी हैं।

वह बड़ा होने के साथ-साथ काफी चतुर भी हो गया है।

मैं अध्यापिका होने के साथ-साथ माँ भी हूँ।

''साथ-साथ ----------- भी'' का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य बनाइए :

8. ---

पाठ-बारह
लुशेन की माँ

गुणवती, बाग, बैंगन, काँटा, गर्भवती, दुस्साहसी, नाहक, अजगर, भयंकर, आफत, कैद, अपमान, देवलोक, धागा, अनसुना, तड़ित्, चुभना, निगलना, लटकना, चीरना।

प्राचीन काल में मिजोराम में एक स्त्री रहती थी। वह बहुत गुणवती और सुन्दर थी। एक दिन वह अपने बाग में बैंगन तोड़ रही थी। उसके हाथ में बैंगन का काँटा चुभ गया। काँटा चुभने से वह गर्भवती हो गई।

समय आने पर उसने पुत्र को जन्म दिया। उसने अपने पुत्र का नाम रखा-लुशेन राजकुमार। वह बड़ा होने पर बहुत वीर बलिष्ठ हो गया। एक दिन लुशेन की माँ ने कहा ''बेटा! तुम्हारे छह भाई और थे। वे बड़े दुस्साहसी थे। एक दिन वे काले अजगर का शिकार करने गए। तब से नहीं लौटे। अजगर ने उन्हें जिन्दा निगल लिया है। मुझे तुम्हारे भाइयों की बहुत याद आती हैं''।

अपने भाइयों की बात सुनकर लुशेन का दिल भी भर आया। उसने प्रतिज्ञा की कि वह अजगर को मारकर अपने भाइयों को वापस लाएगा। वह काले अजगर की खोज में चल दिया। चलते-चलते शाम हो गई। लुशेन को एक झोपड़ी दिखाई दी। वह उसमें चला गया। वहाँ एक बूढ़ी बैठी थी। उसने बूढ़ी से कहा–

''दादी, क्या मैं आज रात आपकी झोपड़ी में रह सकता हूँ?'' ''जरूर रह सकते हो। किन्तु तुम्हें जाना कहाँ है ?'' बूढ़ी ने पूछा। लुशेन ने कहा, ''मेरे छह भाइयों को एक काले अजगर ने निगल लिया है। मैं उसी की खोज में निकला हूँ।''

''बेटा, तुम्हारे भाई भी मेरे पास ही ठहरे थे। मैंने ही उन्हें काले अजगर का पता बताया था। वह अजगर बहुत भयंकर है। उसके पास से कोई लौटकर नहीं आता। तुम क्यों नाहक अपनी जान आफत में डाल रहे हो। रात को मेरे पास रहकर, सुबह अपनी माँ के पास लौट जाओ'' बूढ़ी बोली।

लुशेन ने उत्तर दिया, ''दादी, मैं उस अजगर के पास अवश्य जाऊँगा। तुम मुझे उसका पता बताओ। मैंने अपने भाइयों को छुड़ाने की प्रतिज्ञा की है।''

बूढ़ी ने, ''जैसी तुम्हारी इच्छा'' कहकर लुशेन को काले अजगर का पता बता दिया। सुबह होते ही वह अजगर के निवास स्थान की ओर चल पड़ा। दोपहर होते-होते वह काले अजगर के पास पहुँच गया। अजगर ने उसे देखते ही कहा –

''तुम कौन हो ? यहाँ से चले जाओ, वरना मैं तुम्हें निगल जाऊँगा।''

''मैं तुम्हारा काल हूँ – लुशेन राजकुमार। तुम्हारे पेट की कैद से अपने भाइयों को छुड़ाने आया हूँ।'' कहकर लुशेन ने अजगर को मार डाला। उसने अजगर का पेट चीर दिया। उसके छह भाई बाहर निकल आए। लुशेन ने उन्हें अपना परिचय दिया, ''मैं आप लोगों का भाई हूँ – लुशेन राजकुमार। मैंने ही इस अजगर को मार कर आप सब को मुक्त किया है।''

किन्तु छह भाइयों ने लुशेन पर विश्वास नहीं किया। उन्होंने उसे वहीं छोड़ दिया। खुद अजगर के टुकड़े लेकर घर आ गए। लुशेन बहुत दुखी हुआ। वह रोता हुआ भाइयों के पीछे-पीछे आया। उसने माँ से कहा –

''माँ! भाइयों ने मेरा अपमान किया है। मैं इनके साथ नहीं रह सकता। तुम मुझे कच्चे धागे का गोला दे दो। मैं उसके सहारे देवलोक जाऊँगा।''

माँ भी लुशेन के अपमान से दुखी हुई। उसने कहा, ''बेटा! तुम मुझे भी अपने साथ ले चलो।''

लुशेन बोला, ''ठीक है। तुम मेरे पीछे धागा पकड़ कर आ जाना। ध्यान रखना कि धरती की ओर नहीं देखना। ऐसा करने से बीच में ही लटक जाओगी।''

''ऐसा ही करूँगी'' कहकर लुशेन की माँ ने उसे कच्चे धागे का गोला दे दिया। वह धागे के सहारे देवलोक की ओर जाने लगा। माँ भी पीछे-पीछे धागे पर चढ़ने लगी। धीरे-धीरे दोनों आकाश में

पहुँच गए। जब छह भाइयों ने यह दृश्य देखा तो वे चिल्लाने लगे। वे चिल्ला-चिल्ला कर लुशेन और माँ को वापिस बुला रहे थे।

लुशेन ने भाइयों की बात नहीं सुनी। वह चुपचाप ऊपर चढ़ता गया। माँ, अपने पुत्रों की आवाज को अनसुना नहीं कर सकी। उसने धरती की ओर देख लिया। नीचे की ओर देखते ही धागा टूट गया। लुशेन की माँ बीच आकाश में लटकी रह गई। लुशेन देवलोक चला गया।

लुशेन की माँ आज तक वहीं लटकी हुई है। वह जब रोती है, तभी बादल उमड़ते और बरसते हैं। वह जिस धागे पर लटकी हुई है, उसका ऊपरी सिरा तडित् है और नीचे का सिरा पवन।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

गुणवती = गुणी, गुणशाली।
बाग = वाटिका, उपवन।
बलिष्ठ = बली, बलवान।
दुस्साहसी = हानिकर साहस करने वाला, अनुचित साहस करने वाला।
अजगर = एक बड़ा सर्प जो बकरी, हिरन आदि को निगल जाता है।
नाहक = व्यर्थ, बेमतलब।
आफ़त = मुसीबत, संकट।
निगलना = गले से नीचे उतार देना।
चीरना = टुकड़े करना।
अपमान = अनादर, बेइज्जती।
धागा = तागा, डोरा।
लटकना = टँगना।
तड़ित् = बिजली।
चुभना = धँसना, नुकीली चीज का भीतर घुसना।

2. उत्तर दीजिए :

(क) स्त्री कैसे गर्भवती हो गई ?

(ख) स्त्री के पुत्र का क्या नाम था ?

(ग) एक दिन माँ ने लुशेन से क्या कहा ?

(घ) लुशेन ने कैसी प्रतिज्ञा की ?

(ङ) बुढ़िया ने लुशेन को अजगर के बारे में क्या बताया ?

(च) लुशेन ने अजगर से क्या कहा ?

(छ) लुशेन ने अपने भाइयों को कैसे बचाया ?

(ज) लुशेन के दुखी होने का क्या कारण था ?

(झ) लुशेन ने देवलोक जाने का निर्णय क्यों लिया ?

(ञ) लुशेन की माँ ने लुशेन से अपने को भी देवलोक चलने को क्यों कहा ?

(ट) लुशेन की माँ बीच आकाश में क्यों लटकी रह गई ?

(ठ) प्रस्तुत कथा से आपको कौन-सा उपदेश मिलता है ?

(ड) एक मणिपुरी लोक्कथा अपने शब्दों में लिखने का प्रयास कीजिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

गुणवती --

बलिष्ठ --

दुस्साहसी --

नाहक --

आफत --

अपमान --

अनसुना --

तड़ित् --

भयंकर --

गोला --

4. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) अपने भाइयों की बात सुनकर ------------------------------------।

(ख) दोपहर होते-होते वह --।

(ग) छह भाइयों ने लुशेन पर ---।

(घ) वह रोता हुआ भाइयों के ---।

(ङ) वह धागे के सहारे ---।

5. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) लुशेन के छह भाई और थे। ☐

(ख) अजगर की खोज करते समय लुशेन को एक महल दिखाई दिया। ☐

(ग) सुबह होते ही लुशेन अजगर के निवास-स्थान की ओर चल पड़ा। ☐

(घ) लुशेन ने अजगर का सिर काट डाला। ☐

(ङ) माँ भी पीछे-पीछे धागे पर चढ़ने लगी। ☐

6. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

धातु+ना के निर्देशात्मक रूप से क्रिया के कार्य पर सामान्य जोर देने का अर्थ प्रकट होता है। जैसे –

तुम धागा पकड़कर आ जाना।
तुम अपने बड़े भाई की बात मानना।
तुम जल्दी वापस आना।
तुम यह पुस्तक जरूर पढ़ना।
तुम अकेले मत जाना।
यह दवा रोज तीन बार पीना।
ध्यान रखना कि धरती की ओर नहीं देखना।

7. नीचे लिखे दो उदाहरणों को भी देखिए :

तुम मेरे साथ बाजार चलो।

तुम मेरे साथ बाजार चलना।

दोनों वाक्य निर्देशात्मक हैं। पहले वाक्य से बाजार चलने का आदेश प्रकट होता है। किन्तु दूसरे वाक्य से बाजार चलने के आदेश पर केवल सामान्य जोर देने का अर्थ प्रकट होता है।

L1V2G9

पाठ-तेरह

मणिपुरी साहित्य के निर्माता : महाकवि अङाङ्हल

गौरव, जन्मजात, प्रतिभा, आजीविका, कातिब, गाथा, साम्प्रदायिकता, संकीर्णता, कथानक, दुखान्त, अन्योक्ति, कृति, अनोखी, अभिनेता, स्वर्गवास, मरणोपरान्त, अलंकृत, कोख, धन्य।

जिस जाति का साहित्य जितना महान होता है, वह जाति भी उतनी ही महान होती है। यदि हमें किसी जाति और राष्ट्र के सच्चे गौरव को जानना है तो राजनीति और इतिहास से अधिक उसके साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। इस बात का सच्चा उदाहरण मणिपुरी भाषा का साहित्य है, जिसमें मणिपुरी समाज की वीरता, प्रेम, मानवता, त्याग, बलिदान आदि विशेषताएँ जगमगा रही हैं। इस साहित्य की रचना जिन महान लेखकों ने की, उनमें हिजम अङाङ्हल का स्थान बहुत ऊँचा है। वे मणिपुरी भाषा के महाकवि थे।

महाकवि अङाङ्हल का जन्म 28 जुलाई, 1892 ई. को मणिपुर की राजधानी इम्फाल से ९ मील दूर स्थित शामुरौ नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री डुम्ब्रा सिंह और माता का नाम श्रीमती चाओबीतोन देवी था। निर्धनता के कारण वे पाँचवीं से आगे स्कूली-शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके, किन्तु उनकी जन्मजात प्रतिभा ने निर्धनता से हार नहीं मानी। वह जीवन की पाठशाला से मिली शिक्षा के बल पर विकसित होती रही। अङाङ्हल गाँव छोड़ कर इम्फाल आ गए। यहाँ वे ‘‘याइस्कुल हीरुहन्बा’’ नामक मुहल्ले में रहने लगे। आजीविका चलाने के लिए उन्होंने ‘‘चैराप-कोर्ट’’ में कातिब का काम शुरू किया। इसी के साथ-साथ वे साहित्य-साधना भी करते रहे।

महाकवि अङाङ्हल की सब से प्रसिद्ध कृति ''खम्बा थोइबी शैरेङ्'' है। इसमें मणिपुरी संस्कृति और लोक-जीवन की अनेक विशेषताएँ प्रकट हुई हैं। खम्बा और थोइबी की गाथा तो मणिपुर के घर-घर में पहले से ही कही और सुनी जाती है, अङाङ्हल ने उसे साहित्यिक रचना का रूप देकर संसार भर में फैला दिया। यह मणिपुरी समाज को उनकी बहुत बड़ी देन है।

''जहेरा'' अङाङ्हल का प्रसिद्ध उपन्यास है। इसमें बताया गया कि जातिवाद, साम्प्रदायिकता और विचारों की संकीर्णता मानव के शत्रु हैं। ''जहेरा'' का कथानक दुखान्त है।

''शीङेल इन्दु'', ''इबेम्मा'', ''पोक्तबी'', ''याइथिङ्कोनु'' आदि अङाङ्हल की अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। अन्योक्ति शैली में रची गई उनकी एक कृति ''थम्बाल'' भी है। मणिपुरी गद्य में यह अपने ढंग की अनोखी रचना है।

अङाङ्हल बहुत अच्छे अभिनेता भी थे। इतना ही नहीं, उन्होंने ''चित्रांगदा नाट्य मन्दिर'' की स्थापना की थी और ''मणिपुर ड्रामाटिक यूनियन (एम.डी.यू.) की स्थापना में भरपूर सहयोग किया था। उन्होंने अपने नाटकों में समाज का सच्चा चित्र प्रस्तुत किया है।

महाकवि अङाङ्हल का स्वर्गवास 25 अप्रैल, 1943 ई. को हुआ। ''मणिपुरी साहित्य परिषद'' द्वारा उन्हें मरणोपरान्त सन् 1948 में ''कवि रत्न'' उपाधि से अलंकृत किया गया।

महाकवि अङाङ्हल सच्चे अर्थों में भारत के जातीय कवियों में से एक थे। उन जैसे कवि को जन्म देकर मातृभूमि की कोख धन्य हो गई।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

महान	=	श्रेष्ठ।
गौरव	=	महत्व, सम्मान, प्रतिष्ठा।
जन्मजात	=	जन्म के समय से, उत्पति-काल से।
प्रतिभा	=	बुद्धि, विलक्षण, बौद्धिक शक्ति।

पाठशाला	=	विद्यालय, स्कूल।
आजीविका	=	रोजगार, धंधा।
कातिब	=	लिखने वाला।
कृति	=	रचना, काम।
कथानक	=	कहानी की मूल कथा-वस्तु के अतिरिक्त औरों पर भी घटित हो सके।
अनोखा	=	अनूठा, अद्भुत।
अभिनेता	=	अभिनय करने वाला, एक्टर।
स्वर्गवास	=	स्वर्ग में निवास करना, मृत्यु।
मरणोपरान्त	=	मरने के बाद।
अलंकृत	=	अलंकारयुक्त, भूषित।
कोख	=	पेट, गर्भाशय।
धन्य	=	प्रशंसनीय, कृतार्थ।

2. उत्तर दीजिए :

(क) अङाङ्हल कौन थे ?

(ख) अङाङ्हल का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

(ग) अङाङ्हल के माता-पिता का नाम क्या था ?

(घ) अङाङ्हल गाँव छोड़ कर कहाँ रहते थे ?

(ङ) आजीविका चलाने के लिए अङाङ्हल ने कौन-सा काम किया था ?

(च) अङाङ्हल की सब से प्रसिद्ध कृति कौन-सी है ?

(छ) ‘‘खम्बा-थोइबी शैरेङ्’’ को मणिपुरी समाज को अङाङ्हल की बहुत बड़ी देन क्यों कहा गया है ?

(ज) ‘‘जहेरा’’ उपन्यास के माध्यम से अङाङ्हल ने क्या बताया ?

(झ) अङाङ्हल की प्रसिद्ध रचनाएँ कौन-कौन सी हैं ?

(ञ) ‘‘थम्बाल’’ अङाङ्हल की कैसी कृति है ?

(ट) अङाङ्हल नाट्य से कैसे जुड़े हुए थे ?

(ठ) अङाङ्हल की मृत्यु कब हुई ?

(ड) मणिपुरी साहित्य परिषद द्वारा अङाङ्हल को कब किस उपाधि से अलंकृत किया गया?

(ढ) अङाङ्हल के समय के कुछ साहित्यकारों के नाम बताइए।

(ण) अङाङ्हल की किसी एक कृति के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

गौरव --

प्रतिभा --

आजीविका --

संकीर्णता --

कृति --

अनोखा --

मरणोपरान्त --

धन्य --

जन्मजात --

4. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) अङाङ्हल का जन्म इम्फाल के शामुरौ नामक गाँव में हुआ था। ☐

(ख) अङाङ्हल ने पाँचवीं कक्षा तक स्कूली-शिक्षा पाई। ☐

(ग) ‘‘खम्बा-थोइबी शैरेङ्’’ अङाङ्हल की सब से प्रसिद्ध कृति है। ☐

(घ) ‘‘थम्बाल’’ अन्योक्ति शैली में रची गई कृति है। ☐

(ङ) अङाङ्हल ने ‘‘मणिपुर ड्रामेटिक यूनियन’’ की स्थापना की थी। ☐

5. तालिका को देखिए, पढ़िए और वाक्य बनाइए :

अङाङ्हल	मणिपुरी भाषा के महाकवि गाँव छोड़कर इम्फाल आ गए। साहित्य-साधना करते रहे। बहुत अच्छे अभिनेता भी याइस्कुल हीरुहन्बा नामक मुहल्ले में रहते	थे।

----

6. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

वह बहुत मेहनत करता है, किन्तु गरीब है।
बलदेव खूब पढ़ता था, किन्तु फेल हो गया।
मैंने जेम्स को बार-बार बुलाया, किन्तु वह नहीं आया।
उसने बहुत कहा, किन्तु किसीने नहीं माना।
अब्दुल बीमार है, किन्तु किसी ने ध्यान नहीं दिया।

7. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) चाओबा, अच्छा आदमी है, किन्तु -------------------------।

(ख) इबेमचा छोटी बच्ची है, किन्तु -----------------------------।

(ग) नैकिम सच बोलती है, किन्तु -----------------------------।

(घ) तुम लाख समझाओ, किन्तु -------------------------------।

पाठ-चौदह

दीपावली

दीपावली, कार्तिक, अमावस्या, धन-धान्य, अधिष्ठात्री, सिद्धिदाता, राजाभिषेक, निर्वाण, सजावट।

डानथोइ - दीदी लनलैमा !

लनलैमा - अरे डानथोइ ! क्या है ?

डानथोइ - क्या आज छुट्टी है दीदी ?

लनलैमा - हाँ, आज दीपावली की छुट्टी है।

डानथोइ - दीपावली क्या होती है दीदी ?

लनलैमा - दीपावली लक्ष्मी पूजा का त्योहार है। यह त्योहार कार्तिक की अमावस्या को संध्या-समय दीप जलाकर मनाया जाता है ?

डानथोइ - दीपावली के दिन लोग क्या करते हैं ?

लनलैमा - दीपावली के दिन घरों की सफाई करते हैं। संध्या के समय दीप जलाकर प्रकाश किया जाता है।

डानथोइ - दीदी, दीपावली के त्योहार में किसकी पूजा की जाती है।

लनलैमा - इस त्योहार में धन-धान्य की अधिष्ठात्री लक्ष्मी और सिद्धिदाता गणेश की पूजा की जाती है।

डानथोइ - यह त्योहार भारत में कहाँ-कहाँ मनाया जाता है ?

लनलैमा - यह त्योहार भारत में सभी जगह मनाया जाता है।

डानथोइ - दीदी , यह त्योहार कार्तिक अमावस्या के दिन ही क्यों मनाया जाता है ?

लनलैमा - इसके अनेक कारण हैं।

ङानथोइ - दीदी , उन्हें भी जरा बताइए न।

लनलैमा - रामभक्ति शाखा के लोगों का विश्वास है कि इस दिन श्रीराम का राजाभिषेक हुआ था।

ङानथोइ - और दीदी .... ?

लनलैमा - इसी दिन राजा बलि को अपना खोया हुआ राज्य पुन: वापस मिला था।

ङानथोइ - कैसे ?

लनलैमा - भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण करके राजा बलि का सारा राज्य ले लिया और उसे पाताल भेज दिया। किन्तु उसके पूर्वजन्म के सुकर्मों से प्रसन्न होकर भगवान ने कार्तिक की अमावस्या की रात को उसका राज्य फिर वापस दे दिया।

ङानथोइ - तो दीदी, क्या यह दिन केवल धन-दौलत को पाने की पूजा करने का दिन है ?

लनलैमा - नहीं तो, इसके महत्व के और भी कारण हैं।

ङानथोइ - कौन-कौन से कारण हैं ?

लनलैमा - जैन धर्म के अनुयायी इसे भगवान महावीर के निर्वाण का दिन मानते हैं। समाज सुधारक स्वामी दयानन्द जी और वेदान्त की जीती-जागती मूर्ति रामतीर्थ की मृत्यु भी इसी दिन हुई थी।

ङानथोइ - दीपावली के दिन लोगों को बड़ा आनन्द आता होगा ?

लनलैमा - क्यों नहीं, दीपावली की रात को लोग दीपकों की सजावट देखने के लिए घरों से बाहर निकलते हैं। एक साथ बहुत सारे जलते दीप देखकर बच्चे खुशी से फूले नहीं समाते।

ङानथोइ - दीदी, मैं भी आज रात को दीपकों की सजावट देखने जाऊँगी।

लनलैमा - हाँ, हम सब आज रात दीपकों की सजावट देखने चलेंगे।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

कार्तिक = हिन्दू वर्ष का आठवीं महीना।

अमावस्या = महीने के कृष्ण पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि।

धन-धान्य = रुपया, पैसा, अर्थ आदि।

अधिष्ठात्री = देखभाल करने वाली।

सिद्धिदाता = सफलता प्रदान करने वाला, गणेश।

राजाभिषेक = राज गद्दी पर बैठने की रीति तथा उत्सव।

सजावट = अलंकरण, शोभा, तैयारी।

2. उत्तर दीजिए :

(क) दीपावली क्या होती है ?

(ख) दीपावली कब मनाई जाती है ?

(ग) दीपावली के दिन लोग क्या करते हैं ?

(घ) दीपावली के त्योहार में किसकी पूजा की जाती है ?

(ङ) दीपावली का त्योहार कार्तिक अमावस्या के दिन क्यों मनाया जाता है ?

(च) भगवान विष्णु ने वामन अवतार लेकर क्या किया ?

(छ) कार्तिक अमावस्या के दिन किन-किन महान लोगों की मृत्यु हुई थी ?

(ज) दीपावली की रात को लोग क्या करते हैं।

(झ) अपने घर में मनाए जाने वाली दीपावली का वर्णन संक्षेप में लिखिए।

(ञ) भारत के अलावा किन-किन देशों में दीपों का त्योहार होता है ? समझते हैं तो बताइए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

संध्या-समय ---

प्रकाश ---

धन-धान्य ---

विश्वास --

राजाभिषेक --

पूर्वजन्म --

निर्वाण --

सुधारक --

अनुयायी --

सजावट --

4. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और यथासम्भव वाक्य बनाइए :

कार्तिक अमावस्या के दिन	दीपों का त्योहार होता है। लक्ष्मी देवी की पूजा होती है। श्रीराम का राजभिषेक हुआ था। हनुमानजी पैदा हुए थे। राजा बलि को अपना खोया राज्य पुन : वापस मिला। भगवान महावीर का निर्वाण हुआ। स्वामी दयानन्द की मृत्यु हुई। रामतीर्थ की मृत्यु भी हुई।

----

5. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) दीपावली भारत में कुछ ही जगह मनाई जाती है। [ ]

(ख) दीपावली के त्योहार में घर-घर में लक्ष्मी की पूजा होती है। [ ]

(ग) दीपावली के त्योहार में सुबह से रात तक दीप जलाए जाते हैं। [ ]

(घ) दीपावली की रात को दीपों की सजावट होती है। [ ]

(ङ) लोग दीपावली के दीपों की सजावट को देखने घरों से बाहर निकलते हैं। [ ]

6. पढ़िए और समझिए :

फूला नहीं समाना = बहुत खुश होना।

दीपावली के दीपों की सजावट को देखकर बच्चे फूले नहीं समाते।

7. पढ़िए, समझिए और याद रखिए :

सजाना	-	सजावट
रुकना	-	रुकावट
बनाना	-	बनावट
लिखना	-	लिखावट
दिखना	-	दिखावट
मिलना	-	मिलावट
गिरना	-	गिरावट
थकना	-	थकावट
खिलना	-	खिलावट

पाठ-पन्द्रह

माँ, कह एक कहानी

K9F6V3

चेटी, उपवन, तात, सुरभि, मनमानी, भ्रमण, मानधन।

'माँ कह एक कहानी।'
''बेटा, समझ लिया क्या तूने
मुझको अपनी नानी?''

''कहती है मुझसे यह चेटी,
तू मेरी नानी की बेटी!
कह माँ, कह, लेटी ही लेटी,

राजा था या रानी ?
राजा था या रानी ?
माँ?, कह एक कहनी।'

''तू है हठी मानधन मेरे,
सुन, उपवन में बड़े सवेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,

जहाँ सुरभि मनमानी।''
'जहाँ सुरभि मनमानी।'
हाँ, माँ कह एक कहानी।'

(मैथिलीशरण गुप्त)

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

चेटी	=	दासी
मानधन	=	प्रतिष्ठा ही जिसका धन हो।
तात	=	पिता
सुरभि	=	सुगन्धित, प्रिय।
मनमानी	=	जो जी चाहे, वह काम।

2. उत्तर दीजिए :

(क) पुत्र माँ से क्या कहता है ?
(ख) माँ अपने पुत्र को क्या उत्तर देती है ?
(ग) कौन किसको नानी की बेटी कहता है ?
(घ) पुत्र अपनी माँ से किसकी कहानी कहने को कहता है ?
(ङ) माँ कैसे कहानी कहना शुरू करती है ?
(च) माँ-बेटे की इस बातचीत को अपने शब्दों में लिखिए।
(छ) 'माँ, कह एक कहानी' कविता का मूल भाव लिखिए।
(ज) किसी विषय पर माँ और बेटे के बीच का एक वार्तालाप लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

मानधन --

उपवन --

भ्रमण --

सुरभि --

मनमानी --

कहानी --

4. पंक्तियाँ पूरी कीजिए :

तू है हठी --,

सुन, --,

-- थे तेरे,

जहाँ -- ।

5. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

नानी	=	माँ की माँ
नाना	=	माँ का पिता
दादी	=	पिता की माँ
दादा	=	पिता का पिता
काका/चाचा	=	पिता का छोटा भाई
काकी/चाची	=	काका/चाचा की पत्नी
मामा	=	माँ का भाई
मामी	=	मामा की पत्नी
बुआ	=	पिता की बहन
फूफा	=	बुआ का पति
मौसी	=	माँ की बहन
मौसा	=	मौसी का पति
भाभी	=	भाई की पत्नी
जेठ	=	पति का बड़ा भाई
जेठानी	=	जेठ की पत्नी
देवर	=	पति का छोटा भाई
देवरानी	=	देवर की पत्नी

Y9L9K2

पाठ-सोलह

सब से बड़ा धन

साक्षरता, सामान्य, अक्षर, सीढ़ी, अध्ययन, उन्नति, रहस्य, अनिवार्य, निरक्षर, प्राथमिक, अभियान, अन्तर्गत, प्रतिशत, नागरिक, कुंजी।

साक्षरता का सामान्य अर्थ है – अक्षर लिखने का ज्ञान प्राप्त करना। अक्षर पहचानने और उन्हें लिखने का ज्ञान प्राप्त करना शिक्षा की पहली सीढ़ी है। इस ज्ञान को प्राप्त किए बिना किसी भी विषय का गम्भीर अध्ययन नहीं किया जा सकता।

अब हम पुराने काल में नहीं जा रहे हैं। हमारा युग आधुनिक युग है। इसमें विज्ञान ने बहुत उन्नति की है। विज्ञान की सहायता से अनेक नई-नई बातें प्रकट हुई हैं और मनुष्य ने प्रकृति के रहस्य खोलने में सफलता पाई है। इससे हमारे समाज का विकास हुआ है। यह अनिवार्य है कि हमारा समाज लगातार विकास के मार्ग पर बढ़ता रहे। यह तभी सम्भव है, जब हम सब पढ़ना-लिखना जानते हों। पढ़ने-लिखने और समाज के विकास का गहरा सम्बन्ध है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ था। गाँव में रहने वाले लोग निरक्षर थे। इसलिए हम तेजी से विकास नहीं कर सके। स्वतन्त्र भारत की सरकार ने बड़ी संख्या में प्राथमिक विद्यालय खोले। इसके बाद साक्षरता की विशाल योजना बनाई। शिक्षा और साक्षरता सम्बन्धी योजनाओं के परिणाम आश्चर्यजनक रूप से अच्छे निकले। साक्षरता का प्रतिशत तेजी से बढ़ने लगा। फलस्वरूप हमारा देश भी तीव्र गति से विकास करने लगा।

अज्ञान का अन्धकार सब से भयानक होता है। जिस समाज के नागरिक अज्ञानी होते हैं, वह समाज कभी उन्नति नहीं कर सकता। साक्षरता अज्ञान को मिटाने की कुंजी है। जो साक्षर होता है। वह बहुत सारे विषयों की जानकारी आसानी से प्राप्त कर लेता है और ज्ञानी बन जाता है। जैसे सूर्य निकलते ही अंधेरा भाग जाता है, वैसे ही ज्ञान मिलते ही अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाता है।

हमारा एक कर्तव्य भी है। हम मुहल्ले-पड़ोस में पता लगाएँ कि कौन साक्षर नहीं है। जो साक्षर न हो, उसे साक्षर बनाने की कोशिश करें। हम अपनी पढ़ाई में थोड़ा-सा समय बचा कर अपने पास-पड़ोस के लोगों को साक्षर बना सकते हैं। किसी ने कहा है कि विद्यादान से बड़ा कोई दान नहीं होता।

विद्या ऐसा धन है, जो खर्च करने पर बढ़ता है और खर्च न करने पर घटता जाता है। इसलिए हमें अपनी विद्या हमेशा दूसरों को देनी चाहिए। इससे हमारा भी भला होगा और समाज का भी।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

साक्षरता = पढ़े-लिखे होने की दशा।
सीढ़ी = ऊँचे स्थान पर पहुँचने के लिए बना हुआ बाँसों का सिलसिला, जीना।
सामान्य = साधारण, मामूली।
उन्नति = बढ़ती, तरक्की।
रहस्य = गुप्त भेद, गोपनीय विषय।
अनिवार्य = जिस काम या दशा को टालना संभव न हो, आवश्यक।
गहरा = जिसकी सतह किनारे से नीची हो, गम्भीर, कठिन।
निरक्षर = अनपढ़, जिसे अक्षर-ज्ञान न हो।
अभियान = सामने जाना, युद्ध के लिए आगे बढ़ना।
प्रतिशत = प्रति सौ, सौ का अंश।
कुंजी = चाबी, अर्थ बताने वाली पुस्तक।

2. उत्तर दीजिए :

(क) साक्षरता का क्या अर्थ है ?
(ख) शिक्षा की पहली सीढ़ी क्या है ?
(ग) किससे हमारे समाज का विकास हुआ है ?
(घ) भारत सरकार ने प्रत्येक नागरिक को अक्षर-ज्ञान से परिचित कराने के लिए क्या किया?
(ङ) साक्षरता अज्ञान को मिटाने की कुंजी क्यों कही गई है ?
(च) साक्षरता के बारे में हमारा क्या कर्तव्य है ?
(छ) विद्या कैसा धन है ?
(ज) हमें अपनी विद्या हमेशा दूसरों को क्यों देनी चाहिए ?

(झ) साक्षरता के लिए क्या-क्या कदम उठाए जाने चाहिए ?

(ञ) अपने मुहल्ले के लोगों की साक्षरता के लिए आप क्या करना चाहेंगे ?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

साक्षरता --

निरक्षर --

सीढ़ी --

उन्नति --

रहस्य --

अनिवार्य --

अभियान --

प्रतिशत --

कुंजी --

4. तालिका को देखिए, ध्यान से पढ़िए और खण्ड ''क'' तथा ''ख'' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
अब हम	प्राथमिक शिक्षा का अभियान चलाया।
विज्ञान की सहायता से	उसके लिए ज्ञान का मार्ग खुल जाता है।
सरकार ने सारे देश में	अनेक नई-नई बातें प्रकट हुई हैं।
हमारा देश भी	पुराने काल में नहीं जी रहे हैं।
जो साक्षर होता है	तीव्र गति से विकास करने लगा।

----

5. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) मनुष्य ने प्रकृति के रहस्य --।

(ख) इसके अन्तर्गत बड़ी संख्या में --।

(ग) साक्षरता का प्रतिशत --।

(घ) ज्ञान मिलते ही अज्ञान का --।

(ङ) इससे हमारा भी भला होगा ---।

6. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) हमारा युग आधुनिक युग है। ☐

(ख) गाँव में रहने वाले लोग साक्षर थे। ☐

(ग) अज्ञान का अन्धकार सब से भयानक होता है। ☐

(घ) साक्षरता अज्ञान को मिटाने की कुंजी है। ☐

(ङ) हमें अपनी विद्‌या हमेशा दूसरों को नहीं देनी चाहिए। ☐

7. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

पठित पाठ में एक वाक्य है – ''किसी ने कहा है कि विद्‌यादान से बड़ा दान नहीं होता''। इस वाक्य के ''किसी ने कहा है'' वाक्य-खण्ड से पूर्ण अर्थ का बोध होता है और दूसरे वाक्य-खण्ड ''विद्‌यादान से बड़ा कोई दान नहीं होता'' से भी पूर्ण अर्थ का बोध होता है। इस प्रकार के पूर्ण अर्थ प्रकट करने वाले वाक्य-खण्ड को उपवाक्य कहते हैं।

उपवाक्य के तीन भेद होते हैं –

(क) स्वतन्त्र उपवाक्य

(ख) प्रधान उपवाक्य

(ग) आश्रित उपवाक्य

(क) स्वतन्त्र उपवाक्य :- इस प्रकार का उपवाक्य किसी पर आश्रित न होकर अपने आप में स्वतन्त्र होता है। जैसे –

मैंने यह काम किया।

हमारा युग आधुनिक युग है।

हमारा एक कर्तव्य भी है।

(ख) प्रधान उपवाक्य :- मिश्र वाक्य का जो मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय वाला वाक्य-खण्ड होता है, वह प्रधान उपवाक्य होता है। जैसे –

किसी ने कहा है कि विद्यादान से बड़ा कोई दान नहीं होता।

हम मुहल्ले-पड़ोस में पता लगाएँ कि कौन साक्षर नहीं है।

बाप की इच्छा थी कि बेटा डॉक्टर बने।

उपर्युक्त उदाहरणों में "किसी ने कहा है", "हम मुहल्ले-पड़ोस में पता लगाएँ" और "बाप की इच्छा थी" प्रधान उपवाक्य हैं। प्रधान उपवाक्य यद्यपि दूसरे वाक्यों से जुड़ा रहता है, तथापि अर्थ और भाव में स्वतन्त्र होता है।

(ग) आश्रित उपवाक्य :- इस प्रकार के उपवाक्य का अर्थ प्रधान उपवाक्य पर आश्रित रहता है। जैसे –

मैं जानता हूँ कि वह निर्दोष है।

बाप की इच्छा थी कि बेटा डॉक्टर बने।

जो मेहनत करता है, उसे सफलता मिलती है।

उपर्युक्त उदाहरणों में "कि वह निर्दोष है", "कि बेटा डॉक्टर बने" और "जो मेहनत करता है" आश्रित उपवाक्य हैं। इन तीनों उपवाक्यों के अर्थ क्रमश : "मैं जानता हूँ", "बाप की इच्छा थी" और "उसे सफलता मिलती है" प्रधान उपवाक्यों पर आश्रित हैं।

पाठ-सत्रह

आजाद हिन्द फौज

Q5D5S9

दरअसल, वक्त, प्रेरणा, चमत्कारी, घोषणा, कार्यालय, पुश्तैनी, एकत्र, हित, समृद्‌ध, नारा, कार्यभार, भव्य, कमान, अवकाश, उपहार, सुचारु, आशीर्वाद, ठिठकना।

मोइराङ्
14 अप्रैल, 2004

प्रिय बेटी,

खुश रहो।

तुम्हारे पत्र का उत्तर अब तक पहुँच चुका होगा। यह पत्र मैं अपनी ओर से लिख रहा हूँ। यों ही मन हो आया कि तुम्हें कुछ बातें बताऊँ। दरअसल आज सुबह मैं तुम्हारा सन्देश पहुँचाने तुम्हारी सहेली, रेणु के घर गया था। वहाँ से लौटते वक्त मेरे कदम 'नेताजी सुभाष मेमोरियल'' के सामने ठिठक गए। मैं आन्तरिक प्रेरणा से मुख्य द्‌वार से होता हुआ सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति के सामने पहुँच गया। भारतीय इतिहास के उस महान स्वाधीनता-सेनानी और आजाद हिन्द फौज के चमत्कार कार्यों को याद करते हुए मैं काफी देर वहाँ रहा।

आजाद हिन्द फौज ने 18 मार्च, 1944 को म्यानमार की ओर से मणिपुर में प्रवेश किया था। कर्नल शौकत अली मलिक उसका नेतृत्व करते थे। उन्होंने ही 14 अप्रैल, 1944 को मोइराङ् में तिरंगा झण्डा लहराया था और भारत की आजादी की घोषणा की थी।

स्वाधीनता प्रेमी मणिपुरी जनता ने आजाद हिन्द फौज की मुक्त हृदय से सहायता की थी। हेमाम थम्बालजाओ सिंह ने आजाद हिन्द फौज का कार्यालय बनाने के लिए अपना पुश्तैनी घर दान कर दिया था। दूसरे लोगों ने भोजन जुटाने एवं सूचनाएँ एकत्र करने का कार्य किया था। ऐसा इसलिए हुआ कि मणिपुर के लोग सुभाषचन्द्र बोस को भारतीय स्वाधीनता संघर्ष का प्रतीक मानते थे।

आजाद हिन्द फौज की स्थापना के विचार ने सर्वप्रथम 10 दिसम्बर, 1941 को ज्ञानी प्रीतम सिंह और कप्तान मोहन सिंह की भेंट से जन्म लिया था। यह भेंट उत्तरी मलाया के जित्रा नामक स्थान के समीप एक जंगल में हुई थी। इस भेंट के परिणामस्वरूप मोहन सिंह ने अपने 54 साथियों के साथ भारत की स्वाधीनता के लिए जीवन समर्पित करने का व्रत लिया था। उन्हें ही इस मुक्ति फौज का जी.ओ.सी (जनरल ऑफीसर कमांडिंग) बनाया गया था। जब जापानियों ने सिंगापुर विजय प्राप्त कर ली तो उन्होंने युद्ध में बन्दी बनाए गए भारतीय सैनिकों को मोहन सिंह को सौंप दिया। वे सभी आजाद हिन्द फौज में शामिल होकर, ''इंकलाव जिन्दाबाद'' और ''आजाद हिन्दुस्तान जिन्दाबाद'' के नारों से आकाश गुंजाने लगे।

सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज का कार्यभार सन् 1943 में सम्भाला था। उन्होंने सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों की भव्य परेड की सलामी लेने के बाद इतिहास प्रसिद्ध नारा दिया था - ''चलो दिल्ली, चलो दिल्ली''। आजाद हिन्द फौज का आदर्श था - ''एकता, विश्वास और त्याग''। सुभाषचन्द्र बोस ने स्वाधीनता की लड़ाई में स्त्रियों की भागीदारी सुनिश्चय करने के लिए ''झांसी रानी रेजीमेंट'' भी बनाई थी। इसकी कमान कप्तान लक्ष्मी को सौंपी गई थी।

क्या तुम आजाद हिन्द फौज का पूरा इतिहास जानती हो ? यदि नहीं, तो तुम्हें जानना चाहिए। आजाद हिन्द फौज ने ही हर भारतवासी में अपने देश के लिए मर मिटने की भावना जगा दी। आजाद हिन्द फौज का इतिहास हमें अपनी मातृभूमि पर प्राण न्योछावर करने की प्रेरणा देता है।

तुम्हारी माँ ने तुम्हारे लिए नए कपड़े खरीदे हैं। मैं तुम्हारे लिए कुछ पुस्तकें लाया हूँ। इस बार अवकाश आने पर तुम्हें ये वस्तुएँ उपहार में मिलेंगी।

अपना अध्ययन सुचारु रूप से करती रहना और स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना।

तुम्हें हम दोनों का आशीर्वाद।

तुम्हारा पिता
एल.ब्रोजेन सिंह

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

दरअसल	=	असल में, वास्तव में।
सन्देश	=	समाचार।
चमत्कार	=	अद्भुत बात, करामात।
नेतृत्व	=	नायक या सरदार होने का भाव।
घोषणा	=	एलान करना।
कार्यालय	=	ऑफिस।
पुश्तैनी	=	जो कई पीढ़ियों से चला आता हो।
समृद्ध	=	उन्नतिशील, धनी, विशेष रूप से आता हो।
कमान	=	आदेश, हुक्म, फौजी ड्यूटी।
समर्पित	=	सौंपा हुआ, दिया हुआ।
शामिल	=	इकट्ठा, मिला हुआ।
न्योछावर	=	उत्सर्ग, बलिदान।
अवकाश	=	शून्य स्थान, छुट्टी।
उपहार	=	भेंट, सौगात।
सुचारु	=	व्यवस्थित ढंग से।

2. उत्तर दीजिए :

(क) कब आजाद हिन्द फौज ने मणिपुर में प्रवेश किया था ?

(ख) मणिपुर में प्रवेश करते समय आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व कौन कर रहा था ?

(ग) १४ अप्रैल, १९४४ को मोइराङ् में क्या हुआ था ?

(घ) हेमाम थम्बालजाओ ने आजाद हिन्द फौज के लिए क्या किया था ?

(ङ) दूसरे लोगों ने आजाद हिन्द फौज के लिए क्या किया था।

(च) मणिपुर के लोग सुभाषचन्द्र को क्या मानते थे ?

(छ) ज्ञानी प्रीतम सिंह और कप्तान मोहन सिंह की भेंट कहाँ हुई थी ?

(ज) मोहन सिंह ने कौन-सा व्रत लिया था ?

(झ) जापानियों ने मोहन सिंह को क्या सौंप दिया ?

(ञ) सुभाषचन्द्र ने कब आजाद हिन्द फौज का कार्यभार सम्भाला था ?

(ट) सुभाषचन्द्र ने इतिहास-प्रसिद्ध नारा 'चलो दिल्ली' कब और कहाँ दिया था ?

(ठ) आजाद हिन्द फौज का आदर्श क्या था ?

(ड) आजाद हिन्द फौज का इतिहास हमें क्या प्रेरणा देता है ?

(ढ) भारत की आजादी के लिए लड़ने वाले कुछ वीर सेनानियों के नाम लिखिए।

(ण) कक्षा-अध्यापक के सहयोग से सुभाषचन्द्र बोस की संक्षिप्त जीवनी लिखने का प्रयास कीजिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

प्रेरणा ---

घोषणा ---

पुश्तैनी ---

एकत्र ---

कार्याभार ---

अवकाश ---

उपहार ---

सुचारु --

चमत्कारी --

भव्य --

4. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और खण्ड ''क'' तथा ''ख'' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
कर्नल शौकत अली मलिक	कप्तान लक्ष्मी को सौंपी गई थी।
मणिपुरी जनता ने आजाद हिन्द फौज की	एकता, विश्वास और त्याग।
झांसी रानी रेजीमेट की कमान	उसका नेतृत्व कर रहे थे।
आजाद हिन्द फौज का आदर्श था –	मुक्त हृदय से सहायता की थी।

----

5. सही कथन चुनिए और लिखिए :

(क) सुभाषचन्द्र महान स्वतन्त्रता-सेनानी थे।

(ख) सुभाषचन्द्र ने मोइराङ् में भारत की आजादी की घोषणा की थी।

(ग) कप्तान मोहन सिंह को मुक्ति फौज का जी.सी.ओ. बनाया गया।

(घ) सुभाषचन्द्र ने आजाद हिन्द फौज का कार्यभार सन् १९४३ में सम्भाला था।

(ङ) आजाद हिन्द फौज की कमान भी कप्तान लक्ष्मी को सौंपी गई थी।

----

6. ध्यान से पढ़िए, सोचिए और समझिए :

तुम्हारे पत्र का उत्तर अब तक पहुँच चुका होगा।

अब घर में तोमचौ काम करता होगा।

इस समय मेमचा काम करती होगी।

-इस प्रकार के वाक्यों में क्रिया के होने में सन्देह का बोध होता है।

U1N5F2

पाठ-अट्ठारह

राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य

आवास, अंधाधुंध, विनाश, संरक्षण, जागरूक, अपार, धरोहर, सम्पत्ति, पर्यटक, गैंडा, कस्तूरी-मृग, अर्थ-व्यवस्था, सारंग, उद्यान, अभयारण्य, आरक्षित, स्तनपायी, साँड, नीलगाय, बारहसिंघा, पर्यावरण, समक्ष, उजाड़ना।

संसार के अनेक भागों में मनुष्यों ने पशु-पक्षियों, मछलियों और वन्य जीव-जन्तुओं के प्राकृतिक आवास उजाड़ दिए हैं। प्राणियों की कुछ प्रजातियाँ तो अंधाधुंध शिकार के कारण बिल्कुल लुप्त हो गई हैं। इस विनाश को ध्यान में रखते हुए विश्व-भर में वन्य जीव-जन्तुओं के संरक्षण हेतु आवाज उठाई जाने लगी है। अनेक देशों में जागरूक नागरिकों ने वन्य-जीव संरक्षण समितियाँ बना कर इन जीवों की रक्षा हेतु आन्दोलन प्रारंभ कर दिया है। भारत में वन्य जीव-जन्तुओं की अपार धरोहर है। सभी वन्य प्राणी हमारी राष्ट्रीय संपत्ति हैं। अत : उनकी रक्षा करना आवश्यक है। देश-विदेश के पर्यटक इन्हें देखने आते हैं। इससे हमारी अर्थ-व्यवस्था को लाभ पहुँचता है। भारत के वनों में अनेक जीव-जन्तु पाए जाते हैं, जैसे - गैंडा, चीता, शेर, बाघ, कस्तूरी-मृग, सङाई आदि। यहाँ सारंग पक्षी भी पाए जाते हैं।

इन वन्य-प्राणियों की सुरक्षा के लिए भारत सरकारने राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीवन आरक्षण स्थल तथा अभयारण्य स्थापित किए हैं। इनमें वन्य जीवों को प्राकृतिक वातावरण उपलब्ध करा कर सुरक्षित रखा जाता है। अभयारण्य वह आरक्षित स्थान है जहाँ वन्य-प्राणियों की रक्षा के साथ-साथ लुप्त होती प्रजातियों का विकास भी किया जाता है। भारत में अनेक राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य हैं। असम में काजिरंगा, मानस, बंगाल में अलीपुर, उत्तरप्रदेश में वनबासा; उत्तरांचल में जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क; पंजाब में राजाजी; कश्मीर में दाचीगाम, राजस्थान में रणथम्भौर, मध्य प्रदेश में चन्द्रप्रभा, महाराष्ट्र में पोचरम; आन्धप्रदेश में गुण्डी, केरल में मदुमलाई, तामिल नाडु में बान्दीपुर, मणिपुर में कैबुल लमजाओ आदि भारत के उल्लेखनीय राष्ट्रीय उद्यान तथा अभयारण्य हैं।

असम और केरल में गैंडा, स्तनपायीपशु, हाथी, राजस्थान में ऊँट और जंगली घोड़े तथा कई अन्य स्थानों पर साँड, भैंसा, नीलगाय, हिरण, बारहसिंघा आदि के संरक्षण के उपाय किए गए हैं। वन्य प्राणियों का हमारे पर्यावरण से गहरा सम्बन्ध है। यदि हमने उनकी रक्षा न की तो दुनियाभर में पर्याणवरण-असंतुलन उत्पन्न हो जायगा और मनुष्य जाति के समक्ष जीवन-रक्षा का संकट खड़ा हो जाएगा। हमारे देश में इस सम्बन्ध में काफी जागरूकता उत्पन्न हो गई है। यही कारण है कि सरकार भी राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य बना कर वन्य प्राणियों की रक्षा कर रही है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

आवास	=	वासस्थान, घर।
अंधाधुंध	=	बिना सोचे-विचारे।
विनाश	=	अस्तित्व न रहना, लोप, बिगड़ जाना।
संरक्षण	=	रक्षा करने की क्रिया, हिफाजत।
जागरूक	=	जागता हुआ, जागरणशील।
धरोहर	=	थाती, अमानत।
पर्यटक	=	भ्रमण करने वाला, सैलानी।
उद्यान	=	बगीचा, वाटिका, पार्क।
अभयारण्य	=	वन का वह भाग, जिसे जंगली जानवरों के लिए सुरक्षित किया गया हो।
उपलब्ध	=	प्राप्त।
आरक्षित	=	रक्षा किया हुआ, रिजर्व किया हुआ।
स्तनपायी	=	स्तन का दूध पान करने वाला।
असंतुलन	=	आपेक्षित तौल बराबर न होना।
समक्ष	=	सामने।

2. उत्तर दीजिए :

(क) प्राणियों की कुछ प्रजातियों के लुप्त होने का क्या कारण है ?

(ख) वन्य प्राणियों की रक्षा करना क्यों आवश्यक है ?

(ग) भारत के वनों में किस प्रकार के जीव-जन्तु पाए जाते हैं ?

(घ) वन्य प्राणियों की सुरक्षा के लिए भारत सरकार ने क्या किया है ?

(ङ) अभयारण्य क्या है ?

(च) भारत में कहाँ-कहाँ उल्लेखनीय राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य हैं ?

(छ) भारत में कौन-कौन से पशुओं के संरक्षण के उपाय किए गए हैं ?

(ज) हमारी सरकार राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य बनाकर प्राणियों की रक्षा क्यों कर रही है ?

(झ) कैबुल लमजाओ अभयारण्य के बारे में दस वाक्य लिखिए।

(ञ) वण्य प्राणियों का पर्यावरण के साथ कैसा सम्बन्ध है ?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

आवास ---

विनाश ---

जागरूक ---

धरोहर ---

आरक्षित ---

पर्यावरण ---

समक्ष ---

अपार ---

4. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) भारत में वन्य जीव-जन्तुओं की अपार धरोहर है। ☐

(ख) सभी वन्य प्राणी हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति है। ☐

(ग) देश-विदेश के पर्यटक वन्य प्राणियों को देखने आते हैं। ☐

(घ) अभयारण्य में अनेक प्रकार के वन्य प्राणी रखे जाते हैं। ☐

(ङ) वन्य प्राणियों का हमारे पर्यावरण से गहरा सम्बन्ध है। ☐

5. खाली जगह भरिए :

(क) वन्य जीवों की ------------------------------ प्रारम्भ कर दिया गया है।

(ख) पर्यटकों के आने से ------------------------------ लाभ पहुँचता है।

(ग) भारत के वनों में ------------------------------ पाए जाते हैं।

(घ) भारत सरकार ने ------------------------------ स्थापित किए हैं।

(ङ) मनुष्य जाति के समक्ष ------------------------------ खड़ा हो जाएगा।

6. अर्थ लिखिए :

आवास = ------------------------------

धरोहर = ------------------------------

उद्‌यान = ------------------------------

आश्रय = ------------------------------

समक्ष = ------------------------------

उपलब्ध = ------------------------------

जागरूक = ------------------------------

7. विशेषण बनाइए :

पूजन - ------------------------------

अनुकरण - ------------------------------

कथन - ------------------------------

सराह - ------------------------------

उल्लेख - ------------------------------

8. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनकी एक से अधिक अर्थ होते हैं, जैसे –

अन्तर	=	भिन्नता, हृदय।
अम्बर	=	आकाश, वस्त्र।
अर्थ	=	मतलब, धन।
उत्तर	=	उत्तर दिशा, जवाब।
कुल	=	सब, वंश।
कर	=	हाथ, टैक्स।
काल	=	समय, मृत्यु।
गौर	=	गोरा, ध्यान।
गुरु	=	शिक्षा देने वाला, भारी।
चारा	=	उपाय, घास।
जरा	=	बुढ़ापा, थोड़ा-सा।
दंड	=	सजा, डण्डा।
नाना	=	विविध, माँ का पिता।
पर	=	परन्तु, पंख।
पद	=	पैर, ओहदा।
पूर्व	=	पहले, पूर्व दिशा।
फल	=	खाने वाला फल, परिणाम।
मधु	=	शहद, शराब।
मान	=	सम्मान, अभिमान।
मित्र	=	दोस्त, सूर्य।
विधि	=	ब्रह्मा, नियम।
संग	=	साथ, पत्थर।
सोना	=	निद्रा, एक कीमती धातु का नाम।
हल	=	खेती का एक औजार, सुलझाना।

पाठ-उन्नीस

संयुक्त राष्ट्र संघ

करीब, विनाशक, महसूस, आशंका, संगठन, मुद्दा, सुरक्षा, स्थापना, लक्ष्य, समाधान, नियुक्त, पृष्ठभूमि, गोलार्ध।

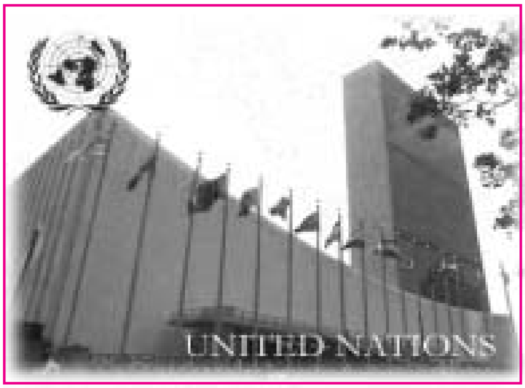

द्वितीय विश्व युद्ध करीब-करीब समाप्त होने जा रहा था। उसके विनाशक रूप को देखकर सभी लोगों को महसूस हो गया कि यदि मानवता को बचाना है तो तृतीय महायुद्ध की आशंकाओं को रोकने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन अति आवश्यक है। अत : 1943 ई. के नवम्बर माह में ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस तथा चीन ने मिलकर एक घोषणा-पत्र जारी किया। इसमें विश्व के सभी राष्ट्रों की सुरक्षा का मुद्दा उठाया गया। इसे ''चार राष्ट्रों की मास्को घोषणा'' के नाम से जाना जाता है। सन् 1944 में संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की रूपरेखा तैयार की गई, लेकिन उसमें रूस और अमेरिका के बीच काफी मतभेद उभर आए। सन् 1945 के फरवरी माह में चर्चिल, स्टालिन और रूजबेल्ट रूस में क्रिमीया के पास यालटा में मिले। आखिरकार 25 उक्टूबर, 1945 को ''संयुक्त राष्ट्र संघ'' नामक एक विश्व-संस्था की स्थापना हुई। इसे ही संक्षेप में यू.एन.ओ. कहा जाता है।

इस संगठन का मुख्य लक्ष्य है – अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा। संयुक्त राष्ट्र संघ विश्व के सभी राष्ट्रों के बीच मित्रता की भावना पर जोर देते हुए सभी राष्ट्रों के बीच बातचीत तथा समान अधिकार पर बल देता है। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देते हुए विश्व की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक समस्याओं का समाधान करना भी इस संघ का उद्देश्य है।

संयुक्त राष्ट्र की महासभा का विचार तथा निर्णय अन्तिम और सर्वोच्च माना जाता है। इसमें प्रत्येक सदस्य-राष्ट्र अपने पाँच प्रतिनिधि भेज सकता है, किन्तु मतदान का अधिकार केवल एक प्रतिनिधि को ही होता है। संघ की महासभा महासचिव और अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायधीश भी नियुक्त कर सकती है। महासभा में संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के अन्तर्गत किसी भी विषय पर चर्चा की जा सकती है। यू.एन.ओ. का सर्वाधिक प्रभावशाली अंग सुरक्षा-परिषद है। इसके पाँच स्थाई और दस अस्थाई सदस्य हैं । पाँच स्थाई सदस्य हैं – संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, रूस, फ्रान्स तथा चीन।

यू.एन.ओ. का दूसरा अवयव है ट्रस्टी-काउन्सिल, जिसके अन्तर्गत अनेक संस्थाएँ एवं परिषदें हैं, जैसे एफ.ए.ओ. (खाद्य एवं कृषि संगठन), डब्ल्यू.एच.ओ. (विश्व स्वास्थ्य संगठन) यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, विज्ञान और सांस्कृतिक संगठन), यूनिसेफ (संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपात कोष) तथा आई.एल.ओ (अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन) आदि-आदि। ये सभी मानवता की रक्षा एवं विश्वशान्ति के लिए कार्य करती हैं।

संयुक्त राष्ट्रसंघ का एक अपना निजी डाकघर है और अलग एक टिकट भी। इसका अपना झण्डा भी है। यह झण्डा नीली पृष्ठभूमि पर सफेद रंग से जैतून के पत्तों वाली दो शाखाएँ दाईं-बाईं ओर और बीच में पृथ्वी का गोलार्ध अंकित है, जिसमें उत्तर मेरु का अंश स्पष्ट दिखाई देता है। यह चित्र संघ का प्रतीक-चिह्न भी है।

संयुक्त राष्ट्र संघ में पाँच भाषाएँ प्रयोग की जाती थीं – अंगरेजी, फ्रान्सीसी, रूसी, चीनी और स्पेनी। सन् 1973 में अरबी भाषा भी जोड़ दी गई।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिख शब्दों के अर्थ समझिए :

महसूस - अनुभव।
मुद्दा - विषय।
संगठन - ऑर्गेनाइजेशन।
प्रतीक - प्रतिरूप, सिम्बल।
विनाशक - नाश करनेवाला, बिगाड़ने वाला।
आशंका - भय, सन्देह।
सुरक्षा - समुचित रक्षा।

2. उत्तर दीजिए :

(क) द्वितीय विश्वयुद्ध के विनाशक रूप को देखकर लोगों को क्या महसूस हो गया ?
(ख) कब किन किन देशों ने मिलकर घोषणा-पत्र जारी किया ?
(ग) घोषणा-पत्र में कौन-सा मुद्दा उठाया गया ?
(घ) सन् 1945 के फरवरी में कौन कौन कहाँ गए ?
(ङ) कब संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई ?
(च) संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्य लक्ष्य क्या है ?
(छ) संयुक्त राष्ट्र संघ के अन्य उद्देश्य कौन कौन से हैं ?
(ज) संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा क्या क्या काम कर सकती है ?
(झ) महासभा में सदस्य-राष्ट्र कितने प्रतिनिधि भेज सकता है ?
(ञ) सुरक्षा परिषद में कितने प्रतिनिधि भेजा जा सकता है ?
(ट) सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य कौन कौन हैं ?
(ठ) ट्रस्टी-काउन्सिल में कौन कौन सी संस्थाएँ और परिषदें हैं ?
(ड) संयुक्त राष्ट्र संघ के झण्डे का रूप कैसा है ?
(ढ) संयुक्त राष्ट्र संघ में कौन कौन सी भाषाओं का प्रयोग होता है ?
(ण) सुरक्षा परिषद के कर्तव्य के बारे में अपने विचार प्रकट कीजिए।
(त) एक सामाजिक संगठन किसी समाज की शांति-व्यवस्था के लिए क्या-क्या कर सकता है?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

करीब ---

विनाशक ---

महसूस ---

मुद्दा ---

समाधान ---

नियुक्त ---

आशंका ---

सुरक्षा ---

4. तालिका को देखिए और वाक्य बनाइए :

संयुक्त राष्ट्र संघ	का	एक अपना निजी डाकघर अपना अलग एक टिकट अपना अलग झण्डा अपना अलग महत्व	है।

----

5. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) संयुक्त राष्ट्र संघ एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है। ☐

(ख) चार राष्ट्रों की मास्को-घोषणा में विश्वं के सभी राष्ट्रों की सुरक्षा का मुद्दा उठाया गया। ☐

(ग) चर्चिल, स्टालिन और रुजबेल्ट अमेरिका के याल्टा में मिले। ☐

(घ) प्रत्येक सदस्य-राष्ट्र के पाँचों प्रतिनिधियों को महासभा में मतदान का अधिकार है। ☐

(ङ) यू.एन.ओ. का सर्वाधिक प्रभावशाली अंग सुरक्षा-परिषद है। ☐

(च) यू.एन.ओ. में केवल पाँच भाषाओं का ही प्रयोग होता है। ☐

6. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) तृतीय महायुद्ध की आशंकाओं को ------------------------------------।

(ख) रूस और अमेरिका के बीच ------------------------------------।

(ग) महासभा का विचार तथा निर्णय ------------------------------------।

(घ) ये सभी मानवता की रक्षा एवं ------------------------------------।

7. नीचे लिखे शब्द-युग्मों के अन्तर समझिए :

पाप = धर्म विरुद्ध कार्य।
अपराध = कानून विरोधी कार्य।

स्त्री = नारी मात्र।
पत्नी = किसी की विवाहिता।

प्रतिदान = बदले में कुछ देना।
अनुदान = आर्थिक सहायता।

खेद = मन खिन्न होना।
शोक = मृत्यु आदि पर अफसोस।

भिन्न = अलग।
विपरीत = उल्टा।

अभिमान = सच्चा गर्व।
अहंकार = झूठा घमण्ड।

शंका	=	शक, सन्देह।
आशंका	=	खतरा।
अध्यक्ष	=	किसी संस्था का स्थाई प्रधान।
सभापति	=	किसी कार्यक्रम या सभा का प्रधान।
कष्ट	=	मन और शरीर दोनों का।
दुख	=	मानसिक पीड़ा।
अवस्था	=	वय।
आयु	=	सम्पूर्ण जीवन-काल।
अस्त्र	=	फेंककर चलाया जाने वाला हथियार।
शस्त्र	=	हाथ में लेकर चलाया जाने वाला हथियार।
अबला	=	स्त्रीमात्र के लिए प्रयुक्त शब्द।
निर्बला	=	बलहीना नारी।
सहयोग	=	एक-दूसरे की आपसी सहायता।
सहायता	=	एक द्वारा दूसरे की मदद।
साधारण	=	मामूली।
सामान्य	=	आम।
उत्साह	=	जोश।
साहस	=	हिम्मत।

I4A5K6

पाठ-बीस

दहेज

नव-विवाहिता, लालची, बेरहमी, दहेज, शैतान, बदतर, ससुराल, कुप्रथा, गृहस्थाश्रम, जहर, क्षमता, रिवाज, रूढ़ी, प्रतिष्ठा, गिरवी, अत्याचार, बारात, बैंरग, जागरूक, कानून, हिचकिचाना।

रोमा : थोइबी, क्या तुमने आज के अखबार में एक नव-विवाहिता को जला कर मार डालने का समाचार पढ़ा ?

थोइबी : हाँ रोमा, पढ़ा। मेरे तो रोंगटे खड़े हो गए। लालची लोगों ने कितनी बेरहमी से एक स्त्री की जान ले ली।

रोमा : दहेज का लालच ऐसा ही होता है। आदमी को शैतान से भी बदतर बना देता है।

थोइबी : क्या तुम जानती हो, दहेज क्या है और इसका चलन कब से है ?

रोमा : नहीं, हमारे समाज में यह बीमारी है ही, नहीं तो मैं कैसे जानूँगी। चलो, गुरुजी के पास चलकर पूछते हैं, उन्हें अवश्य पता होगा।

थोइबी :
रोमा : } चलो, चलते हैं।

थोइबी : गुरुजी, क्या हम अन्दर आ सकते हैं ?

गुरुजी : हाँ-हाँ, अवश्य आओ। कहो, क्या समस्या है ?

रोमा : गुरुजी, थोइबी दहेज के बारे में जानना चाहती है।

गुरुजी : क्यों, क्या बात है ? आज अचानक तुम लोगों को दहेज के बारे में जानने की इच्छा क्यों जाग उठी ?

थोइबी : गुरुजी, आज के अखबार में एक नव-विवाहिता को मार डालने का समाचार छपा है। उसे उसके ससुराल वालों ने दहेज के लालच में मार डाला। हम लोग तभी से अशान्त हैं।

गुरुजी : तुम लोग अशान्त मत होओ। हमारा मणिपुरी समाज इस कुप्रथा से मुक्त है। यहाँ के समाज में स्त्रियों का बहुत ऊँचा स्थान है। उन्हें कोई जला कर नहीं मार सकता।

रोमा : फिर भी, गुरुजी दहेज के बारे में जानकारी दीजिए। हम जानना चाहते हैं।

गुरुजी : ठीक है। पहले दहेज का अर्थ समझो। उस धन-सम्पत्ति या सामान को दहेज कहा जाता है, जो विवाह के अवसर पर वर और कन्या को मिलता है।

थोइबी : गुरुजी, स्पष्ट रूप से समझाइए।

गुरुजी : समझाता हूँ। प्राचीन काल में आर्थिक साधन कम थे। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने पर वर-वधू के सामने आर्थिक समस्या आ खड़ी होती थी, इसीलिए विवाह के समय कन्या के पिता द्वारा कुछ धन या सामान दिया जाता था। इसे यौतक या गौतुक कहा जाता है।

रोमा : वधू का पिता सामान भी देता है और ससुराल वाले वधू को ही जला कर या जहर देकर मार भी डालते हैं – यह बात एकदम समझ में नहीं आती।

गुरुजी : इसका रहस्य भी समझाता हूँ। प्राचीन काल में कन्या का पिता अपनी इच्छा से और अपनी क्षमता के अनुसार धन या सामान देता था। जो नहीं दे पाता था, उससे कोई जबरस्ती नहीं करता था। धीरे-धीरे लालच ने अपना जाल फैलाया। दहेज ने रिवाज का रूप ले लिया और फिर यह रिवाज से रूढ़ि बन गया।

थोइबी : उसके बाद क्या हुआ गुरुजी ?

गुरुजी : उसके बाद दहेज लेना वर पक्ष का अधिकार माना जाने लगा। इसे सामाजिक प्रतिष्ठा से भी जोड़ दिया गया। जिसे विवाह में जितना अधिक दहेज मिलता, वह अपने को उतना ही बड़ा और सम्मानित आदमी समझता।

रोमा : यह तो बहुत बुरी बात हुई।

गुरुजी : तुम ठीक कहती हो। लड़की पैदा होते ही पिता को उसके पालन-पोषण और शिक्षा के बदले उसके विवाह और दहेज की चिन्ता खाने लगती है। कई बार दहेज के लिए घर-जमीन

गिरवी रख कर कर्ज लेना पड़ता है। तुम तो जानती हो, कर्ज की दलदल में एक बार जो फँसा, उसका सब कुछ लूट् जाता है।

थोइबी : इतने पर भी ससुराल वाले अपनी ही बहू को मारने से बाज नहीं आते।

गुरुजी : इसके पीछे धन की भूख है। दहेज में चाहे जितना मिल जाए, पर और अधिक पाने की भूख बढ़ती ही जाती है। इसके चलते ससुराल के लोग बहू पर दबाव डालते हैं कि वह अपने पिता की मजबूरी के कारण ससुराल वालों की माँग पूरी करे। नहीं कर पाती तो वे उस पर तरह-तरह से अत्याचार करते हैं, यहाँ तक कि उसे मार डालने से भी नहीं हिचकिचाते।

रोमा : क्या दहेज का कोई विरोध नहीं करता ?

गुरुजी : अब कभी-कभी दहेज का विरोध भी सुनने को मिलने लगा है। विशेष रूप से, जो लड़कियाँ पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो जाती हैं, उनमें से कुछ दहेज के लालची पुरुषों के साथ विवाह करने से इनकार कर देती हैं। कई बार दहेज की माँग के कारण बारात को बिना वधू के ही बैरंग लौट आना पड़ता है। धीरे-धीरे युवक-युवतियाँ दहेज के विरुद्ध जागरूक हो रहे हैं।

थोइबी : क्या सरकार दहेज जैसी बुराई समाप्त करने के लिए कुछ नहीं करती ?

गुरुजी : सरकार ने दहेज विरोधी कानून बनाया है। इसमें दहेज लेने वालों या दहेज के लालच में किसी स्त्री पर अत्याचार करने वालों के लिए कड़े दण्ड की व्यवस्था है।

रोमा :
थोइबी : धन्यवाद गुरुजी ! आपने हमें दहेज के बारे में बहुत उपयोगी जानकारी प्रदान की।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

दहेज = वह दान, सामग्री आदि जो कन्या का पिता वर-पक्ष को देता है।

बेरहमी = निर्दयता, बेदर्दी।

लालच = लोभ, कोई चीज पाने की बढ़ी हुई इच्छा।

कुप्रथा	=	बुरी परिपाटी।
गृहस्थाश्रम	=	चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम जिसमें लोग विवाह करके घर बसाते हैं।
यौतक	=	दहेज, दुहिता धन।
प्रतिष्ठा	=	मान, मर्यादा, आदर।
कर्ज	=	ऋण, उधार।
गिरवी	=	बंधक, रेहन।
हिचकिचाना	=	मन का आगा-पीछा करना।
बारात	=	वर के साथ कन्या-पक्ष के यहाँ जाने वाले लोग।
बैरंग	=	जिसका महसूल भेजने वाले ने न चुकाया हो।
कानून	=	विधि, नियम।
दलदल	=	कीचड़, पंक।

2. उत्तर दीजिए :

(क) रोमा और थोइबी गुरुजी के पास क्यों गईं ?
(ख) दहेज क्या है ?
(ग) यौतुक किसे कहते हैं ?
(घ) ससुराल वाले वधू को क्यों मार डालते हैं ?
(ङ) दहेज कैसे रूढ़ि बन गया ?
(च) दहेज लेने को सामाजिक प्रतिष्ठा से क्यों जोड़ दिया गया ?
(छ) लड़की के पिता को किसकी चिन्ता आने लगती है ?
(ज) लड़की के पिता को दहेज के लिए क्या करना पड़ता है ?
(झ) ससुराल वाले बहू पर कैसा दबाव डालते हैं ?
(ञ) कब बहू पर तरह-तरह से अत्याचार किए जाते हैं ?
(ट) पढ़ी-लिखी लड़कियाँ कैसे दहेज का विरोध करती हैं ?
(ठ) दहेज विरोधी कानून में कैसी व्यवस्था है ?
(ड) आपके विचार में दहेज-प्रथा ठीक है या नहीं ? कुछ वाक्य लिखिए ।
(ढ) मणिपुर में प्रचलित दहेज के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

लालची --

बेरहमी --

बदतर --

कुप्रथा --

रिवाज --

प्रतिष्ठा --

बैरंग --

अत्याचार --

जागरूक --

रूढ़ि --

4. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) मणिपुरी समाज में स्त्रियों का ----------------------------------।

(ख) प्राचीन काल में --।

(ग) धीरे-धीरे लालच ने --------------------------------------।

(घ) यहाँ तक कि उसे --।

(ङ) कभी-कभी दहेज का विरोध ----------------------------------।

5. तालिका को देखिए, ध्यान से पढ़िए और खण्ड ''क'' तथा ''ख'' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
लालची लोगों ने वर पक्ष का	अधिकार माना जाने लगा।
आज के अखबार में	बेरहमी से एक स्त्री की जान ले ली।
जो नहीं दे पाता था	बारात को बिना वधु के बैरंग लौट आनापड़ता है।
दहेज लेना	एक नव-विवाहिता को मार डालने का समाचार छपा है।
दहेज की माँग के कारण	उससे कोई जबरदस्ती नहीं करता था।

----

6. सही कथन के आगे (✔) का निशान लगाइए :

(क) मणिपुरी समाज दहेज की कुप्रथा से मुक्त है। ☐

(ख) विवाह के वर और कन्या को दी जाने वाली धन-सम्पत्ति को दहेज कहा जाता है। ☐

(ग) प्राचीन काल में कन्या का पिता अपनी इच्छा से धन नहीं देता था। ☐

(घ) कर्ज की दलदल में एक बार जो फँसा, उसका सब कुछ लुट जाता है। ☐

(ङ) आजकल कुछ लड़कियाँ दहेज के लालची पुरुषों के साथ विवाह करने से इनकार कर देती है। ☐

7. तालिका को देखिए और वाक्य बनाइए :

हमारे समाज में यह बीमारी है ही,	नहीं तो	मैं कैसे जानूँगी।
कभी-कभी तुम पत्र लिखा करो		मैं भी लिखना बन्द कर दूँगा।
तुम खूब पढ़ो,		फेल हो जाओगे।
थोड़ा-थोड़ा खाया करो,		बीमार पड़ जाओगे।
समय पर आना		गाड़ी छूट जाएगी।
टिकट लेकर सफर करो,		पकड़े जाओगे।

----

8. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) सम्भल कर जाना, नहीं तो ------------------------------------।

(ख) सुबह जल्दी उठा करो, नहीं तो ----------------------------------।

(ग) कल तुम तुरन्त आओ, नहीं तो ----------------------------------।

(घ) आप जरूर आइए, नहीं तो ------------------------------------।

(ङ) दौड़ते-दौड़ते चलो, नहीं तो ------------------------------------।

पाठ-इक्कीस

नूपी लाल

K2M7L9

स्मृति, व्यस्त, मण्डल, संघर्ष, बारिश, ओला, तूफान, पहल, सूचना, नियंत्रित, प्रांगण, रिहाई, जुटना।

इम्फाल

7 नवम्बर, 2004

मेरी प्रिय सहेली कंचन,

मधुर स्मृति। तुम कैसी हो ? बहुत दिनों से तुम्हारे साथ पत्र-व्यवहार नहीं कर सकी। क्षमा करना। आजकल मैं बहुत व्यस्त हूँ। जब से मैं अखिल मणिपुरी महिला मण्डल की सचिव बनी, प्रतिदिन सामाजिक कार्यक्रमों में जुटी रहती हूँ। खैर ! मेरी बात छोड़ो। अपने पिछले पत्र में तुमने मणिपुर के सन् 1939 के नूपी लाल अर्थात् नारी-संघर्ष के बारे में पूछा था। आज मैं उस ऐतिहासिक घटना के बारे में बता रही हूँ।

सन् 1939 की बात है। उस वर्ष मणिपुर में खूब बारिश हुई थी, जिससे फसलों का बड़ा नुकसान हुआ। नवम्बर महीने में भी ओलों के साथ तूफानी बारिश हुई। उससे रही-सही फसलें भी बर्बाद हो गईं। इसी बीच व्यापारियों के द्वारा अधिक लाभ कमाने के लालच में उनके गोदामों में भरा चावल मणिपुर से बाहर भेजा जा रहा था। इससे मणिपुरी जनता, विशेष कर नारियों में असन्तोष और क्रोध की लहर दौड़ गई। 11 दिसम्बर 1939 के दिन ख्वाइरम्बन्द बाजार में दूध बेचने वाली श्रीमती अरिबम चाओबीतोन देवी की पहल पर क्रोधित महिलाएँ तत्कालीन पोलिटिकल एजेण्ट जिम्सन साहब के बंगले पर गईं, लेकिन वहाँ के कर्मचारियों ने उन्हें अगले दिन आने को कहा। गुस्से से भरी महिलाओं ने ख्वाइरम्बन्द बाजार में रात काटी। 12 दिसम्बर, 1939 की सुबह सारी महिलाएँ महाराज के दरबार में गईं। उनकी संख्या लगभग तीन हजार थी। दरबारी अध्यक्ष ने उनसे कहा कि महाराज चुड़ाचाँद तीर्थ-यात्रा पर नवद्वीप गए हैं, अत: वह उन्हें तार द्वारा सारी सूचना भेज देगा। महिलाओं ने निश्चय किया कि जब तक महाराज को तार नहीं भेजा जाएगा, वे उस जगह से नहीं हटेंगी। इसपर सरकारी अधिकारी और महिलाओं के बीच कहा-सुनी हुई। परिणामस्वरूप पुलिस का एक सब-इन्सपेक्टर अपने सिपाहियों के

साथ वहाँ आ पहुँचा। चौथी असम राइफल्स का कमाण्डेण्ट भी एक सिविल सर्जन और 25 सिपाहियों के साथ महिलाओं को नियन्त्रित करने के लिए वहाँ आ गया। उनके पहुँचते ही महिलाओं पर लाठी चार्ज एवं संगीनों से हमला शुरू हो गया। परिणामस्वरूप टेलिग्राफ आफिस के प्रांगण में ३७ महिलाएँ लहूलुहान हो गईं। श्रीमती सबी देवी नामक एक महिला बुरी तरह घायल हो गई। घायल महिलाओं को इम्फाल जिला अस्पताल में भरती कराया गया। रजनी देवी, आर.के.सनातोम्बी देवी, वाङ्खेम कुमारी देवी, लाइश्रम अमुबी देवी, खोङ्नाङ् देवी, वाहेङ्बम ताङ्गौ देवी और सारुङ्बम लैमतोन देवी को बन्दी बना कर जेल भेज दिया गया। अन्त में उन महिला कैदियों की जेल से रिहाई के बाद ही मणिपुर में शान्ति लौट आई।

12 दिसम्बर, 1939 को मणिपुरी महिलाओं ने सामाजिक, आर्थिक और मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए बलिदान किया था, आज भी मणिपुर की जनता उसका सम्मान करती है। इसलिए हर 12 दिसम्बर को राज्य स्तर पर ''नूपी लाल दिवस'' मनाया जाता है।

आज के लिए इतना ही। भविष्य में और जानकारी चाहोगी तो लिखना। माँजी और बाबूजी को प्रणाम कहना। छोटों को प्यार।

तुम्हारी सहेली
चनम् लिकलाइ लैमा

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

स्मृति = स्मरण, याद।
व्यस्त = कार्य आदि में संलग्न।
अखिल = सम्पूर्ण, सारा।
मण्डल = समिति।
सचिव = सेक्रेटरी।
ओला = बर्फ का गोला जो वर्षा में कभी-कभी गिरता है।
तूफानी = तूफान जैसा प्रचण्ड, ऊधमी।
पहल = किसी ऐसे कार्य का आरम्भ जिसमें प्रतिकारस्वरूप दूसरे भी कुछ करें।
हमला = आक्रमण, धावा।
रिहाई = मुक्ति, छुटकारा।
प्रांगण = आंगन।

2. उत्तर दीजिए :

(क) कौन किसको पत्र लिखता है ?
(ख) नूपी लाल की घटना कब की है ?
(ग) किस कारण से फसलें बर्बाद हो गईं ?
(घ) मणिपुरी जनता के असन्तोष और क्रोध का क्या कारण था ?
(ङ) किसकी पहल पर क्रोधित महिलाएँ कब और कहाँ गईं ?
(च) क्रोधित महिलाओं ने कहाँ रात काटी ?
(छ) १२ दिसम्बर १९३९ को महिलाएँ कहाँ गईं ?
(ज) दरबार के अध्यक्ष ने महिलाओं से क्या कहा ?
(झ) महिलाओं ने क्या निश्चय किया ?
(ञ) अधिकारी और महिलाओं के बीच हुई कहा-सुनी के परिणामस्वरूप क्या हुआ ?
(ट) सिपाहियों के हमले के परिणामस्वरूप क्या हुआ ?
(ठ) किन-किन लोगों को जेल भेज दिया गया ?

(ड) मणिपुर में शान्ति कैसे लौट आई ?

(ढ) हर १२ दिसम्बर को नूपी लाल दिवस क्यों मनाया जाता है ?

(ण) मणिपुरी महिलाओं के साहस के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।

(त) वर्तमान मैरा पायबी के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

स्मृति ---

व्यस्त ---

नुकसान ---

लालच ---

पहल ---

असन्तोष ---

निश्चित ---

हमला ---

अधिकार ---

सम्मान ---

4. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) सन् १९३९ का नूपी लाल एक ऐतिहासिक घटना है। ☐

(ख) चावल मिलों से मणिपुरी चावल बाहर भेजा जा रहा था। ☐

(ग) क्रोधित महिलाओं ने जिम्सन साहब के बंगले पर हमला किया। ☐

(घ) संघर्ष में श्रीमती सबी देवी बुरी तरह घायल हो गई। ☐

(ङ) हर १२ दिसम्बर को नूपी लाल दिवस मनाया जाता है। ☐

5. खाली जगह भरिए :

(क) नवम्बर महीने में भी ------------------------------------ बारिश हुई।

(ख) स्थानीय लोगों को ------------------------------------ हो गया।

(ग) गुस्से में भी -- रात काटी।

(घ) सरकारी अधिकारी -- हुई।

(ङ) टेलीग्राफ आफिस के प्रांगण में -- हो गई।

(च) घायल महिलाओं को -- कराया गया।

6. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

उस वर्ष मणिपुर में खूब बारिश हुई थी, जिससे बड़ा नुकसान हुआ।
वह दिन-रात पढ़ता था, जिससे उसे सफलता मिली।
अमु रोज अभ्यास करता था, जिससे उसे सफलता मिली।
इस वर्षा बिलकुल नहीं हुई, जिससे अकाल पड़ गया।
उपर्युक्त वाक्यों में निहित उपवाक्यों में कार्य और परिणाम का सम्बन्ध है।

7. पढ़िए, समझिए और याद रखिए :

हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं, जो सुनने में एक-से लगते हैं, किन्तु उनके अर्थ भिन्न होते हैं ऐसे शब्दों की वर्तनी में स्पष्ट अन्तर होता है। जैसे –

शब्द	**अर्थ**	**शब्द**	**अर्थ**
अचल	पर्वत	अनल	आग
अचला	पृथ्वी	अनिल	वायु
अति	बहुत	अन्न	अनाज
इति	समाप्त	अन्य	दूसरा
अणु	कण	अधम	नीच
अनु	पीछे	अधर्म	पाप
अपकार	बुराई	अपेक्षा	आवश्यकता
उपकार	भलाई	उपेक्षा	तिरस्कार

अभय	निडर	आकर	खान
उभय	दोनों	आकार	आकृति
आदि	आरम्भ	उदार	विशाल
आदी	अभ्यस्त	उदर	पेट
ओर	तरफ	कर्म	काम
और	तथा	क्रम	व्यवस्था
कुल	वंश	कान्ति	चमक
कूल	किनारा	क्रान्ति	परिवर्तन
ग्रह	नक्षत्र	दिन	दिवस
गृह	घर	दीन	गरीब
धरा	धरती	पता	ठिकाना
धारा	प्रवाह	पत्ता	पत्र
पवन	हवा	प्रवाह	बहाव
पावन	पवित्र	परवाह	चिन्ता
प्रसाद	कृपा	बदन	शरीर
प्रासाद	महल	वदन	मुख
बात	बातचीत	भवन	मकान
वात	वायु	भुवन	संसार
योग	मेल	रक्त	खून
योग्य	अच्छा	रिक्त	खाली
शाम	सायं	समान	बराबर
श्याम	काला	सम्मान	इज्जत
सुत	पुत्र	हंस	एक पक्षी विशेष
सूत	धागा	हँस	हँसना

पाठ-बाईस
सुर का पद

चोटी, मोहि, भई, अजहुँ, बेनी, ह्वै, लांबी, काढ़त, गुहत, न्हवावत, नागिन, भुई, काचो, चिरजीवौ, दोड़, हलधर, जोटी।

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहि दुध पियत भई, यह अजहुँ है छोटी॥
तु जो कहति बल की बेनी ज्यों, ह्वै है लांबी मोटी।
काढ़त, गुहत, न्हवावत, पोंछत, नागिन सी भुई लेटी॥
काचो दुध पियावत पचि-पचि, देति ना माखन रोटी।
सुर, चिरजीवै दोड़ भैया, हरि हलधर की जोटी॥

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

चोटी	=	सिर के बीचोंबीच छोड़ रखे हुए लम्बे बाल, शिखा।
किती	=	कितनी।
मोहि	=	मुझे।
अजहुँ	=	आज भी।
बेनी	=	स्त्रियों की चोटी।
लांबी	=	लम्बी।
काढ़त	=	काढ़ना, केश सँवरना।
गुहत	=	बनाना, गुँथना।
न्हवावत	=	नहलाना।
भुई	=	भूमि।
काचा	=	कच्चा।
पचि-पचि	=	बहुत दिन जीना।
दोड़	=	दोनों।
हलधर	=	बलराम।
जोटी	=	जोड़ी।

2. उत्तर दीजिए :

(क) बालक कृष्ण अपनी चोटी के बारे में माँ से क्या पूछता है ?

(ख) बार-बार दूध पीने पर भी कृष्ण की अवस्था कैसी है ?

(ग) कृष्ण की बेनी के बारे में माँ क्या कहती है ?

(घ) माँ कृष्ण को क्या खाने को नहीं देती ?

(ङ) किसकी जोड़ी चिरजीवी हो ?

(च) बालक कृष्ण की सुन्दरता का वर्णन पाँच वाक्यों में कीजिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

चोटी --

बेनी --

नागिन --

माखन --

हलधर --

4. पढ़िए और लिंग पहचानिए :

चोटी = स्त्रीलिंग

दूध = पुल्लिंग

बेनी = स्त्रीलिंग

नागिन = स्त्रीलिंग

माखन = पुल्लिंग

रोटी = स्त्रीलिंग

5. सूर के पठित पद का सरल अर्थ लिखिए :

J8M1Q7

पाठ-तेईस

लोक-नृत्य की भूमि : पूर्वोत्तर

अटूट, निर्माण, सुरक्षित, समृद्ध, कर्मकाण्ड, विलक्षण, लामा, मुखौटा, खाल, वृत्ताकार, युदधास्त्र, चैत्र, संक्रान्ति, जलाशय, गाढ़ा, कढ़ाई, दुपट्टा।

लोक-जीवन और लोक-नृत्य का अटूट सम्बन्ध है। लोक-नृत्य तभी से चले आ रहे हैं, जब से मनुष्य समाज का निर्माण हुआ। इनके माध्यम से हमारी सभ्यता और संस्कृति आज तक सुरक्षित है। लोक-नृत्य की दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत अति समृद्ध है। यहाँ के राज्यों में अनेक जातियाँ निवास करती हैं और पर्व-त्योहार के अवसर पर लोक-नृत्यों का आयोजन करती हैं। सब जातियों के लोक-नृत्य कोई न कोई विशेषता लिए हुए होते हैं।

मणिपुरी भाषा में नृत्य को जगोइ कहा जाता है। यहाँ मैतै समाज और जनजातीय समाज में अनेक लोक-नृत्य प्रचलित हैं। लैसेम जगोइ, माइबी-जगोई, लैमा-जगोइ आदि मैतै लोक-नृत्य हैं। कबुइ-जगोइ, ताङ्खुल-जगोइ, कुकी-जगोइ आदि जनजातियों के लोक-नृत्य है।

नागालैण्ड में जलियाङ्, अंगामी, जेसामी, जोखेसाङ् आदि जनजातियों के लोक-नृत्य प्रसिद्ध हैं। यहाँ के निवासी लोक-नृत्यों के अवसर पर पैदू, थेकू, तुरही आदि वाद्यों का प्रयोग करते हैं। नागालैण्ड में प्रचलित लोक-नृत्य सदा सामूहिक होते हैं। जालियाङ् जनजाति को छोड़ कर अन्य सभी जनजातियों के लोक-नृत्यों में पुरुषों की प्रधानता होती है।

मिजोरम के लोग लोक-नृत्यों में बहुत रुचि लेते हैं। चेरोकान, चेराव, खुवाल्लम, सोलकिया, लाङ्लम, पाखुपिला आदि इस राज्य के प्रमुख लोक-नृत्य हैं। चैरोकान एक प्रकार का बाँस-नृत्य हैं, जिसमें प्राय : लड़कियाँ ही नाचती हैं। मिजोराम का सब से प्रचलित लोक-नृत्य है, खुवाल्लम। यह मनुष्य-जीवन के सात कर्मकाण्डों से सम्बन्धित है।

अरुणाचल का मोम्पा-नृत्य बड़ा विलक्षण है। इसमें लामा मुखौटों का प्रयोग करते हैं। वे कभी-कभी शेर की खाल पहन कर भी नृत्य में भाग लेते हैं। इस राज्य में मिस्मी, डफला, आपातानी, तागिन, खम्पती, सिङ्फो, नोक्ते, वांचो आदि जनजातियों के लोक-नृत्य मनमोहक होते हैं।

मेघालय में खासी और गारो क्षेत्र में लोक-नृत्य खुले मैदानों में किया जाता है। खासी लोक-नृत्य में स्त्री-पुरुष अलग-अलग वृत्ताकार नृत्य करते हैं, जिसमें स्त्रियों का वृत्त पुरुषों के वृत्त के भीतर होता है। नृत्य में केवल अविवाहित स्त्रियाँ ही भाग ले सकती हैं, जब कि पुरुषों पर ऐसा कोई बन्धन नहीं है। मेघालय के लोग पासतोह और नासतोह नामक तेज गति वाले लोक-नृत्य हाथ में युद्धास्त्र लेकर करते हैं। यह जयन्तिया में सामाजिक उत्सवों के अवसर पर किया जाता हैं। गारो लोगों में गाला और वाङ्मगाला नामक लोक-नृत्य प्रचलित हैं। मेघालय के लोक-नृत्यों में लोंगाई, सिरनाई और साद लुखिमाई भी प्रसिद्ध हैं। ये मूलत : कृषि सम्बन्धी नृत्य हैं।

असम राज्य के लोक-नृत्य, बिहु के आकर्षक रूप से भला कौन परिचित न होगा। यह चैत्र संक्रान्ति से प्रारम्भ होता है। बिहु लोक-नृत्य के अनेक रूप हैं। जैसे – गोरु बिहु, मानुह बिहु, रंगोली बिहु, माछ बिहु, कगाली बिहु आदि। रंगोली बिहु को बोहाग बिहु भी कहा जाता है। बिहु लोक-नृत्य का सम्बन्ध कृषि-व्यवस्था और मानव-जीवन की भावनाओं से है। इसमें प्रेम भरे गीत गाए जाते हैं। बिहु के अवसर पर किसान अपने गाय-बैलों को जलाशय में स्नान कराने ले जाते हैं और उन्हें बैंगन और खीरे अर्पित करते हैं। यह आर्थिक समृद्धि की कामना से किया जाता है । बिहु में भाग लेने वाली युवतियाँ अपने-नृत्य-वस्त्रों पर गाढ़े लाल रंग से कढ़ाई करती हैं। वे एक लाल रंग का दुपट्टा जैसा वस्त्र भी धारण करती हैं, जिसे रिहा कहा जाता हैं। यह उनकी युवावस्था की पूर्णता को प्रकट करता है। बिहु अत्यन्त मोहक लोक-नृत्यों में से एक है।

त्रिपुरा राज्य में त्रिपुरी और कोकबोरोक जनजातियों के लोक-नृत्य कृषि, शिकार और मनोरंजन से सम्बन्ध रखते हैं। जब से वहाँ बंगाली लोगों का प्रभाव बढ़ा है, तब से बंगाली लोक-नृत्य भी प्रचलित हुए हैं। इससे त्रिपुरा के लोक-नृत्यों का एक नया रूप उभरा है।

हमें पूर्वोत्तर अंचल के सभी लोक-नृत्यों को उनके मूल रूप में सुरक्षित रखने और सारे संसार को लोक नृत्य संस्कृति से परिचित कराने की आवश्यकता है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

अटूट	=	न टूटने वाला, मजबूत।
निर्माण	=	रचना, बनाने या रचने की क्रिया।
वाद्य	=	बाजा।
कर्मकाण्ड	=	धर्म सम्बन्धी कर्म, यज्ञादि।
विलक्षण	=	अलौकिक, असाधारण।
लामा	=	तिब्बत और मंगोलिया के बोद्धों का धर्माध्यक्ष और शासक।
वृत्त	=	गोलाकर।
संक्रान्ति	=	सूर्य या किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना।
जलाशय	=	झील, तालाब।
कामना	=	इच्छा, चाह।

2. उत्तर दीजिए :

(क) लोक-नृत्य कब से चले आ रहे हैं ?

(ख) मणिपुरी भाषा में नृत्य को क्या कहा जाता है ?

(ग) मणिपुर में कौन-कौन से मैतै लोक-नृत्य प्रचलित हैं ?

(घ) मैतै लोक-नृत्य के अलावा मणिपुर में और कौन-कौन से लोक-नृत्य प्रचलित हैं ?

(ङ) नागालैण्ड में कौन-कौन सी जनजातियों के लोक-नृत्य प्रचलित हैं ?

(च) नागालैण्ड के लोक-नृत्यों में कौन-कौन से वाद्यों का प्रयोग होता है ?

(छ) मिजोरम के प्रमुख लोक-नृत्य कौन-कौन से हैं ?

(ज) मिजोरम का सबसे प्रचलित लोक-नृत्य कौन-सा है और उसकी क्या विशेषता है ?

(झ) अरुणाचल में कौन-कौन सी जनजातियों के लोक-नृत्य प्रचलित हैं ?

(ञ) खासी लोक-नृत्य की विशेषताएँ क्या हैं ?

(ट) जयन्तिया में सामाजिक उत्सवों के अवसर पर कैसे लोक-नृत्य किए जाते हैं ?

(ठ) गारो लोगों में कौन-कौन से लोक-नृत्य प्रचिलत हैं ?

(ड) मेघालय के प्रसिद्ध लोक-नृत्य कौन-कौन से हैं ?

(ढ) बिहु लोक-नृत्य के कौन-कौन से रूप होते हैं ?

(ण) बिहु लोक-नृत्य की विशेषताएँ लिखिए।

(त) त्रिपुरा के लोक-नृत्य किससे सम्बन्धित हैं ?

(थ) लोक-जीवन से लोक-नृत्य का सम्बन्ध कैसा है ?

(द) पूर्वोत्तर के प्रमुख लोक-नृत्यों के नाम लिखिए।

(ध) आपके देखे हुए किसी लोक-नृत्य का वर्णन लगभग दस वाक्यों में लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अटूट --

समृद्ध --

विलक्षण --

मुखौटा --

निर्माण --

सुरक्षित --

युद्धास्त्र --

गाढ़ा --

युवावस्था --

विशिष्ट --

4. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और वाक्य बनाइए :

माइबी-जगोइ			प्रसिद्ध		
कबुह-जगोइ					
चेरोकान				लोक-नृत्य	
खुवाल्लम					
मोम्पा-नृत्य	मणिपुर/मिजोरम/अरुणाचल				
नासतोह	मेघालय/असम				
वाङ्मगाला					
लेंघाई					
रंगोली बिहु		का			
कगाली बिहु					है।

5. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) मणिपुरी भाषा में नृत्य को जगोइ कहा जाता है। ☐

(ख) पैदु नागालैण्ड के लोक-नृत्यों में प्रयुक्त एक वाद्‌य है। ☐

(ग) सोलकिया अरुणाचल का एक लोक-नृत्य है। ☐

(घ) सिरनाई त्रिपुरा का लोक-नृत्य है। ☐

(ङ) रंगोली बिहु को बोहाग बिहु भी कहा जाता है। ☐

6. ध्यान से पढ़िए, समझिए और याद रखिए :

हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनका प्रयोग अनेक शब्दों के बदले किया जाता है, जैसे –

अजन्मा	-	जिसका जन्म न हो।
अनुपम	-	जिसकी उपमा न हो।
अपार	-	जिसका पार न हो।
अदृश्य	-	जो दिखाई न दे।
अज्ञ	-	जो न जानता हो।
अनाम	-	जिसका नाम न हो।
अज्ञानी	-	जो कुछ नहीं जानता।
अवैतनिक	-	बिना वेतन के काम करने वाला।
आस्तिक	-	ईश्वर में विश्वास रखने वाला।
आत्महत्या	-	अपनी हत्या स्वयं करना।।
उपर्युक्त	-	ऊपर कहा गया।
कुलीन	-	जो अच्छे कुल में जन्मा हो।
दत्तक	-	जो पुत्र गोद लिया गया हो।
दुराचारी	-	बुरे आचरण वाला।
निराकार	-	जिसका आकार न हो।

निराधार	-	जिसका कोई आधार न हो।
निर्दय	-	जिसमें दया न हो।
नास्तिक	-	ईश्वर में विश्वास न रखने वाला।
पारंगत	-	जो किसी विषय का पूर्ण विद्वान हो।
फलाहारी	-	केवल फल खाकर रहने वाला।
भूतपूर्व	-	जो पहले किसी पद पर रह चुका हो।
माँसाहारी	-	जो माँस खा लेता हो।
लोकप्रिय	-	जो लोगों में प्रिय हो।
विशेषज्ञ	-	विशेष जानकारी रखने वाला।
शाकाहारी	-	केवल साग-सब्जी खाकर रहने वाला।
सदाचारी	-	अच्छा आचरण करने वाला।
सर्वज्ञ	-	जो सब कुछ जानता हो।
सहोदर	-	एक ही उदर से जन्म लेने वाला।

पाठ-चौबीस
थाङ्-ता

अभिप्राय, पारंगत, ग्रहण, मल्लयुद्ध, निपुण, उल्लंघन, संयम, एकाग्रता, जितेन्द्रीयता, ब्रह्मचर्य, प्रशिक्षण, निहत्थे, शरणागत, सृष्टि।

थाङ्-ता मणिपुर की प्राचीन युद्ध-कला का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसमें 'थाङ्' का अर्थ है तलवार और 'ता' का अर्थ है भाला। इस प्रकार थाङ्-ता का अभिप्राय हुआ — तलवार और भाला चलाने की कला। पहले मणिपुर एक छोटा-सा स्वतंत्र राज्य था। इसकी जनसंख्या बहुत कम थी, इसलिए प्रत्येक नागरिक को युद्धकला में पारंगत होना अनिवार्य था। इसके बिना राज्य की रक्षा नहीं की जा सकती थी।

थाङ्-ता की शिक्षा ग्रहण करने के लिए व्यक्ति को स्वस्थ एवं बलवान होना आवश्यक है। थाङ्-ता की कला सिखाने से पहले गुरु अपने शिष्यों को 'सरीत सराक' नामक एक मल्लयुद्ध की कला सिखाता है। इस कला में निपुण होने के बाद थाङ्-ता की शिक्षा दी जाती है। थाङ्-ता सीखते समय खान-पान एवं रहन-सहन के विशेष नियमों का पालन अनिवार्य है। इन नियमों के उल्लंघन करने पर थाङ्-ता की कला में निपुण होना कठिन है। ऐसा लोक विश्वास भी है कि इन नियमों को अनदेखा करनेवाला व्यक्ति युद्ध में पराजीत होकर मर जाता है। इसलिए थाङ्-ता केवल अस्त्र-शस्त्र-ज्ञान की कला ही नहीं, बल्कि शरीर एवं मन को संयम में रखने की विद्य भी है। तन-मन की एकाग्रता, जितेन्द्रीयता और ब्रह्मचर्य का पालन थाङ्-ता की कला के लिए अनिवार्य हैं।

कहा जाता है कि थाङ्-ता की कला का प्रशिक्षण शनिवार से प्रारम्भ होना चाहिए। इसके लिए छात्र गुरु के पास जाता है और विधिवत शिक्षा प्रारम्भ होने के लिए भगवान की पूजा की जाती है। गुरु को प्रणाम करने के बाद पूजा की तलवार को अपने दाँतों से छूकर वह प्रतिज्ञा करता है कि थाङ्-ता की कला में निपुण होने के बाद कोई अनुचित या अनैतिक काम नहीं करेगा तथा अपनी मातृभूमि और राजा के प्राणों की रक्षा के लिए अपने प्राण-न्योछावर कर देगा। किसी निर्दोष और आम जनता की रक्षा जरूर करेगा। वह यह प्रण भी करता है कि कभी किसी निहत्थे पर वार नहीं करेगा, शरणागत की रक्षा करेगा और निर्दोष नागरिकों पर किए जानेवाले अत्याचारों का विरोध करेगा। इस प्रकार थाङ्-ता व्यक्ति को सच्चा नागरिक बनाने की शिक्षा है।

थाङ्-ता का पहला पाठ 'खोङ्फम-अहुम' कहा जाता है। खोङ्फम-अहुम का अर्थ है तीन कदम। ये तीन कदम प्रतीकात्मक भी माने जाते हैं और ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान मङाङ्, लुवाङ् और खुमन नामक देवता कहे गये हैं। इन्हें गुरु के समान कल्पित किया गया है। विश्वास किया जाता है कि मङाङ् गुरु सुबह के समय, लुवाङ् गुरु दोपहर के समय और खुमन गुरु रात के समय की रक्षा करते हैं। इसलिए खोङ्फम अहुम को इन्हीं तीन गुरुओं का प्रतीक माना जाता है। इस प्रकार थाङ्-ता तीन गुरुओं के समान २४ घंटे सतर्क रहने की कला है। मनुष्य के जीवन को तीन भागों में विभाजित किया जाता है, वाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था। इन तीनों अवस्थाओं में जीने की कला भी थाङ्-ता की कला है। इसके साथ ही थाङ्-ता के तीन कदम भूत, भविष्य और वर्तमान के प्रतीक भी माने जाते हैं। इस रूप में थाङ्-ता भूत, भविष्य और वर्तमान में एक सफल व्यक्ति बनकर जीने की कला है। मणिपुर की अन्य कलाओं जैसे — नृत्यकला, मृदंग बजाने की कला और मुक्ना (एक विशेष प्रकार का मल्लयुद्‌ध) की कला आदि को भी थाङ्-ता के इन तीन कदमों की कला पर आधारित माना जाता है।

थाङ्-ता की कला में सब से महत्वपूर्ण भाग है, – थेंगौ। थेंगौ का शाब्दिक अर्थ है आह्वान। इस भाग में केवल तलवार और भाले की कला ही नहीं, दैविक कला भी सिखाई जाती है। शारीरिक शुद्‌धि करण के पश्चात, पाखङ्बा देवता के सर्प रूपवाले चित्र पर कदम रखकर विशेष स्थान एवं विशेष समय पर थेंगौ को सिखाया जाता है। लैनेत थेंगौ, लैचाइ थेंगौ, लैसेम थेंगौ, लैताइ थेंगौ आदि थेंगौ के उल्लेखनीय प्रकार हैं। मणिपुर के लोग मानते हैं कि भगवान सनामही ने संसार की सृष्टि करते समय थेंगौ का प्रयोग किया था।

आजकल थाङ्-ता युद्ध कला के साथ ही एक विशेष खेल-कूद का विषय माना गया है। यह मणिपुर में ही नहीं, विश्व भर में प्रसिद्ध एक विशेष कला है। इस कला के प्रशिक्षण केन्द्र भारत के अन्य स्थानों एवं विदेशों में भी खुल गए हैं। मणिपुर के थाङ्-ता जैसी युद्ध कलाएँ विश्व में और भी हैं, जैसे – केरेट, कराटे, कङ्फू, टाइकुण्डो, ताइची, जुदो, जिंका आदि। मानव-सभ्यता के विकास में इन सभी का ऐतिहासिक महत्व है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

अभिप्राय	=	उद्देश्य, प्रयोजन, मतलब।
पारंगत	=	जिसने किसी विद्या या शास्त्र का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया हो।
मल्लयुद्ध	=	कुश्ती, बाहुयुद्ध।
निपुण	=	चतुर, कुशल।
उल्लंघन	=	लाँघना; नियम, आज्ञा आदि को तोड़ना।
संयम	=	नियन्त्रण, इंद्रियनिग्रह।
एकाग्रता	=	एक ही भाव से लुप्त होने का भाव।
जितेन्द्रीयता	=	इन्द्रियों को जीतने का भाव।
ब्रह्मचर्य	=	वीर्यरक्षा, अविवाहित रह कर विद्यार्जन करने का समय।

प्रशिक्षण	=	ट्रेनिंग।
निहत्था	=	जिसके हाथ में कोई हथियार न हो, बिना हथियार का।
शरणागत	=	शरण में आया हुआ।
सृष्टि	=	निर्माण, संसार।

2. उत्तर दीजिए :

(क) मणिपुर के प्रत्येक नागरिक को युद्धकला में पारंगत होना क्यों अनिवार्य था ?

(ख) थाङ्-ता की शिक्षा कब दी जाती है ?

(ग) थाङ्-ता सीखते समय किसका पालन करना अनिवार्य है ?

(घ) थाङ्-ता कैसी विद्या है ?

(ङ) थाङ्-ता की कला के लिए क्या-क्या अनिवार्य है ?

(च) थाङ्-ता के प्रशिक्षण के लिए छात्र कौन-सी प्रतिज्ञा करता है ?

(छ) खोङ्फम-अहुम को तीन गुरुओं का प्रतीक क्यों माना जाता है ?

(ज) मनुष्य जीवन कितने भागों में विभाजित किया जाता है और वे क्या-क्या हैं ?

(झ) थेंगौ क्या है ?

(ञ) थेंगौ के कौन-कौन से प्रकार होते हैं ?

(ट) सनामही ने कब थेंगौ का प्रयोग किया था ?

(ठ) थाङ्-ता जैसी विश्व में प्रचलित अन्य कुछ युद्ध कलाओं के नाम बताइए।

(ड) मानव सभ्यता के विकास में युद्ध-कलाओं के ऐतिहासिक महत्व के बारे में आप क्या जानते हैं ?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अभिप्राय ---

जनसंख्या ---

पारंगत ---

निपुण ---

उल्लंघन ---

संयम --

प्रशिक्षण --

निहत्था --

सृष्टि --

शरणागत --

4. तालिका को देखिए और वाक्य बनाइए :

थाङ्-ता	प्राचीन युद्धकला का एक अंग केवल अस्त्र-शस्त्र-ज्ञान की कला नहीं व्यक्ति को सच्चा नागरिक बनाने की शिक्षा का पहला पाठ खोङ्फम अहुम कहा जाता विश्व भर में प्रसिद्ध एक विशेष कला	है।

----

5. सही कथन के आगे (✔) का निशान और गलत कथन के आगे (✕) का निशान लगाइए :

(क) थाङ्-ता की शिक्षा ग्रहण करने के लिए व्यक्ति को स्वस्थ एवं बलवान होना आवश्यक है। ☐

(ख) थाङ्-ता की कला का प्रशिक्षण किसी भी दिन से प्रारम्भ हो सकता है। ☐

(ग) खोङ्फम अहुम को तीन गुरुओं का प्रतीक माना जाता है। ☐

(घ) आजकल थाङ्-ता एक विशेष खेल-कूद का विषय बन गया है। ☐

6. खाली जगह भरिए :

(क) युद्धकला के बिना ------------------------------------ सकती थी।

(ख) प्रशिक्षण के लिए छात्र ------------------------------------ जाता है।

(ग) निर्दोष नागरिकों पर ------------------------------------ विरोध करेगा।

(घ) मानव-सभ्यता के विकास में ------------------------------------ है।

7. पढ़िए और समझिए :

थाङ्-ता	=	थाङ् और ता
अस्त्र-शस्त्र	=	अस्त्र और शस्त्र
तन-मन	=	तन और मन
सुख-दुख	=	सुख और दुख
दिन-रात	=	दिन और रात
नर-नारी	=	नर और नारी
माँ-बाप	=	माँ और बाप
राजा-रंक	=	राजा और रंक
पाप-पुण्य	=	पाप और पुण्य
जन्म-मरण	=	जन्म और मरण

8. ध्यान से पढ़िए, समझिए और याद रखिए :

हिन्दी में प्रचलित प्रमुख विराम-चिह्न निम्नांकित हैं –

(1) पूर्ण विराम (।)

प्रश्नवाचक और विस्मयादिबोधक वाक्यों को छोड़कर शेष सभी प्रकार के वाक्यों की पूर्णता प्रकट करने के लिए पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे –

वह मेरा लड़का है।

जल्दी वापस आओ।

अभी तक हमने कुछ भी नहीं खाया है।

शायद वह आ जाता।

(2) प्रश्नसूचक चिह्न(?)

प्रश्नवाचक वाक्यों के अन्त में इस चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे –

तुम्हारा नाम क्या है ?

वह कौन था ?

तुम कब आओगे ?

(3) विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

हर्ष, शोक, घृणा, भय, आश्चर्य आदि को प्रकट करने के लिए कभी तो विस्मयादिबोधक शब्द के बाद और कभी वाक्य के बाद इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे –

हाय! मेरा तो सब कुछ लूट गया

अरे ! तुम आ गए !

छि: ! छि: ! इसे यहाँ से हटाओ।

(4) अल्प विराम (,)

इस चिह्न का प्रयोग विभिन्न स्थितियों में होता है। जैसे –

(क) एक ही तरह के कई पदों, पदबन्धों या उपवाक्यों के किसी एक वाक्य में आने पर–

मोहन, श्याम, राजेन और साजौ खेलने गए।

व्यायाम करना, काम करना और आराम करना एक ही समय में नहीं हो सकता।

मैं जल्दी उठा, चाय पी ली और चला गया।

(ख) 'हाँ', 'नहीं' और सम्बोधन शब्द के बाद –

हाँ, वह मेरा भाई है।

नहीं, मैं यह काम नहीं करूँगा।

अमुचौ, तुम जरूर आना।

(ग) क्योंकि, लेकिन, कारण, फिर, नहीं तो, इसलिए आदि समुच्चयबोधक के पहले–

आज छुट्टी है, क्योंकि रविवार है।

तुमने मुझे बुलाया, इसलिए मैं आया हूँ।

मेरी बात मानो, नहीं तो परिणाम बुरा होगा।

(घ) किसी वाक्य को उद्धृत करते समय उससे पहले –

चाओबा ने कहा, 'मैं यह काम जरूर करूँगा'।

(5) अर्ध विराम (;)

जब अल्प विराम से अधिक, किन्तु पूर्ण विराम से कम रुकना हो, नत इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे –

वह कब लौटेगा; बता नहीं सकता।

(6) निर्देशक (—)

इस चिह्न का प्रयोग प्राय: निर्देश के लिए होता है।

(क) किसी प्रकार की सूची के पहले —

दशरथ के चार पुत्र थे — राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघन।

(ख) वार्तालाप सम्बन्धी लेखों में वक्ता के नाम के बाद —

मोहन — राम, आज रविवार है।

राम — हाँ, आज का कार्यक्रम बताओ।

मोहन — शाम को सिनेमा देखने चलेंगे।

राम — जरूर ।

(7) योजक (-)

इसका प्रयोग समस्त-पदों में होता है। जैसे –

माँ-बाप

दिन-रात

(8) कोलन (:)

इस चिह्न का प्रयोग किसी शब्द की विशेषता बताने में या स्पष्ट करने के लिए होता है। जैसे –

वन : हमारी प्राकृतिक सम्पदा

भारत : एक आदर्श देश

(9) अवतरण या उद्धरण चिह्न (“ ”)

किसी उक्ति, शब्द या वाक्य को उद्धृत करते समय इस चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे –

पिताजी सदा कहते थे, “बेटा, तुम बाद में पछताओगे।”

(10) कोष्ठक (( ))

किसी पद का दूसरा रूप, अर्थ, स्पष्टीकरण या अतिरिक्त सूचना देते समय इस चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे –

सभी लोगों ने गुरुदेव (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) की बहुत प्रशंसा की।

(11) लाघव चिह्न (.)

किसी शब्द का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए उस शब्द के पहले अक्षर के बाद इस चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे –

पं. नेहरू

मि.कुमार

यू.एन.ओ.

9. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए :

(क) नदी वाले तालाब सब पानी से भर गए

(ख) सूर्य का उदय हुआ चिड़ियाँ चहचहाने लगीं किसान खेत की ओर गया

(ग) तुमने ऐसा क्यों कहा मैंने पूछा

(घ) हाय राम उसकी कैसी दशा है

(ङ) इस बार मैंने एम ए की परीक्षा दी

(च) मेरी बात सुनो जल्दी लौट आना

(छ) लिंग के दो प्रकार हैं पुल्लिंग और स्त्रीलिंग

(ज) यह भवन एक करोड़पति सेठ रामदास ने बनवाया था

(झ) वह माँ बाप का लाड़ला बेटा है

(ञ) उन्होंने कहा हम जरूर जीतेंगे

राष्ट्रगान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमांचल, जमुना-गंगा
उच्छल जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।

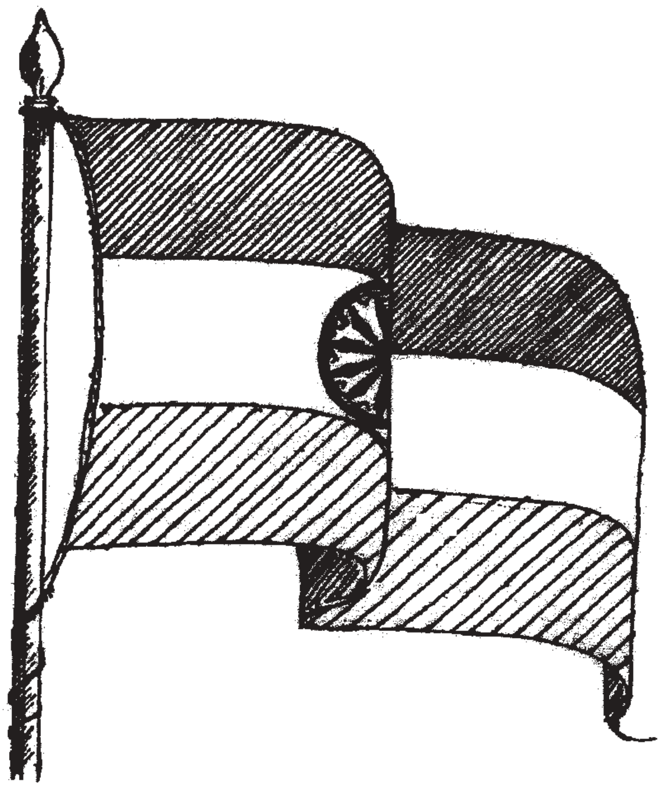

नागरिकों के मूल कर्तव्य

प्रत्येक नागरिक —

क. संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।

ख. स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।

ग. भारत की संप्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे।

घ. देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।

ङ. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों।

च. हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।

छ. प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्दर वन, झील, नदी और वन्य-जीव हैं — रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखें।

ज. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।

झ. सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहे।

ञ. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।